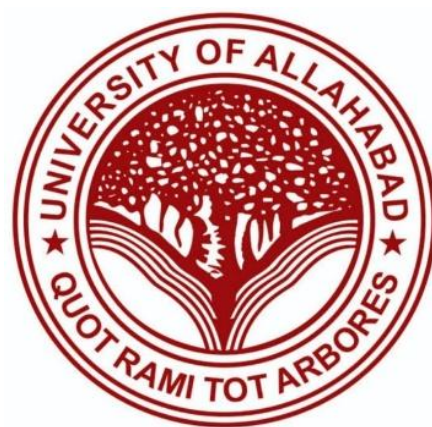




PH.D. RESEARCH MANUAL

A Ready Reckoner for Research Scholars



DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
UNIVERSITY OF ALLAHABAD
Prayagraj, Uttar Pradesh - 211002

प्रस्तावना

राजनीति विज्ञान विभाग पीएचडी शोध पुस्तिका के निर्माण में योगदान देने वाले सभी संकाय सदस्यों के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करता है। यह पुस्तिका एक सामूहिक प्रयास का परिणाम है और इसका सफल समापन विभाग की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

डॉ. लक्ष्मीनारायण बिंधानी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं , जिन्होंने इस मैनुअल के प्रारूपण, संकलन और परिशोधन का लगभग नब्बे प्रतिशत कार्य किया। उनके अथक परिश्रम, बौद्धिक दृढ़ता और बारीकियों पर सूक्ष्म ध्यान ने इस दस्तावेज़ की रीढ़ बनाई।

हम तीन सहयोगियों के महत्वपूर्ण योगदान को भी स्वीकार करते हैं जिनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी:

प्रो मोहम्मद शाहिद , जिन्होंने संपूर्ण मसौदे को सटीकता और सुसंगतता के साथ अंतिम रूप दिया।

प्रोफेसर पंकज कुमार , जिनके मूल विचार से मैनुअल तैयार हुआ और जिनके निरंतर प्रयासों और प्रोत्साहन से इसका समापन सुनिश्चित हुआ।

डॉ. चकाली ब्रम्हय्या , जिन्होंने प्रभावी ढंग से कार्य का समन्वय किया और परियोजना के सुचारू क्रियान्वयन में सहायता की।

विभाग वरिष्ठ प्रोफेसरों - प्रो. वी.के. राय, प्रो. अनुराधा अग्रवाल और प्रो. राजपाल बुडानिया - के बहुमूल्य सुझावों को भी कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करता है, जिन्होंने मैनुअल को गहराई और परिप्रेक्ष्य से समृद्ध किया।

अंत में, हम समिति के अन्य सदस्यों—डॉ. अंजन कुमार साहू, डॉ. चोंगोम एरन ऐमोल , डॉ. रेहनामोल , डॉ. फोकरेलो कपेसा, डॉ. ऋतंभरा मालवीय, डॉ. प्रीतम और डॉ. चिंताला वेंकटरमण—के योगदान की सराहना करते हैं। हालांकि उनके योगदान अनुपात में कम थे, लेकिन अंतिम संस्करण को परिष्कृत करने में अमूल्य थे।

विभाग का मानना है कि यह पीएच.डी. शोध पुस्तिका हमारे शोधार्थियों के लिए एक मूल्यवान मार्गदर्शिका होगी। हम इस महत्वपूर्ण शैक्षणिक पहल में योगदान देने वाले सभी लोगों के आभारी हैं; इन सभी नेक लोगों की सद्भावना के बिना, हम इस पुस्तिका को कभी पूरा नहीं कर पाते।

राजनीति विज्ञान विभाग
सितंबर 2025

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	अनुभाग	पृष्ठ सं.
01	अनुसंधान के चरण	03
02	सामान्य स्वरूपण दिशानिर्देश	06
03	तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्त रूपों की सूची	13
04	परिचय	18
05	साहित्य की समीक्षा	23
06	क्रियाविधि	28
07	परिणाम और विश्लेषण	34
08	बहस	39
09	निष्कर्ष	44
10	संदर्भ	49
11	परिशिष्ट	55
12	नैतिक विचार	61
13	समयरेखा और मील के पत्थर	66
14	साहित्यिक चोरी और शैक्षणिक अखंडता	72
15	शब्दकोष	77
16	पीएच.डी. सारांश लेखन	82

खंड 1: अनुसंधान के चरण

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एक पीएचडी स्कॉलर की यात्रा को समझना

शोध एक व्यवस्थित और विकासशील प्रक्रिया है। यह चरणों में आगे बढ़ता है, और प्रत्येक चरण विद्यार्थी के समग्र शैक्षणिक विकास में योगदान देता है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में, इन चरणों को शैक्षणिक समुदाय में दृढ़ता, नवीनता और योगदान सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यहाँ इन चरणों के लिए एक विस्तृत और समझने में आसान मार्गदर्शिका दी गई है।

1. अनुसंधान के लिए योग्यता

यह यात्रा उन्नत अनुसंधान के लिए पात्रता और तैयारी की परीक्षा से शुरू होती है।

- **प्रवेश का तरीका** : प्रवेश निदेशक द्वारा अनुसंधान में रिक्तियों की अधिसूचना के बाद, आवेदकों को नेट/जेआरएफ प्रतिशत के माध्यम से प्राप्त अंकों के आधार पर सूचीबद्ध किया जाता है।
 - **साक्षात्कार** : योग्य उम्मीदवारों को विशेषज्ञों के एक पैनल के समक्ष अपने शोध विचार प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। यह एक परीक्षा से कहीं बढ़कर है—यह शोध के प्रति आपके जुनून, स्पष्टता और दृष्टिकोण को व्यक्त करने का एक अवसर है।
 - **प्रो टिप** : शोध समस्या, उद्देश्यों और संभावित महत्व पर प्रकाश डालते हुए एक संक्षिप्त लेकिन आकर्षक प्रस्ताव तैयार करें।
 - **पर्यवेक्षक आवंटन** : साक्षात्कार के दो हफ्तों के भीतर, सफल उम्मीदवारों को ऐसे पर्यवेक्षकों के साथ जोड़ा जाता है जिनकी विशेषज्ञता उनके शोध हितों से मेल खाती हो। अपने पर्यवेक्षक के साथ एक मज़बूत तालमेल बनाना बेहद ज़रूरी है, क्योंकि वे आपकी शैक्षणिक यात्रा में आपका मार्गदर्शन करते हैं।
-

2. विषयों का आवंटन और नामांकन

एक बार आप अंदर आ गए तो शोध प्रक्रिया औपचारिक रूप से शुरू हो जाती है।

- **शोध प्रस्तावों को अंतिम रूप देना** : अपने प्रारंभिक विचारों को एक व्यवहार्य और नवीन शोध प्रस्ताव में परिणत करने के लिए अपने पर्यवेक्षक के साथ मिलकर काम करें। इसके बाद, प्रस्ताव

को अंतिम अनुमोदन के लिए **डॉक्टरेट कार्यक्रम समिति (डीपीसी)** और तत्पश्चात **शोध उपाधि समिति (आरडीसी)** के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।

- **आधिकारिक अधिसूचना** : आरडीसी द्वारा अनुमोदन के बाद, अनुसंधान अनुभाग अनुमोदित विषयों और पर्यवेक्षक विवरण की एक सूची अपलोड करता है, जो आपकी शोध यात्रा की आधिकारिक शुरुआत को चिह्नित करता है।
- **नामांकन पूरा करना** : विद्वानों को अपना नामांकन औपचारिक रूप देने के लिए आवश्यक फॉर्म, दस्तावेज और शुल्क तुरंत जमा करना होगा।

3. पाठ्यक्रम कार्य

विद्वानों को आवश्यक शोध उपकरणों से सुसज्जित करने के लिए एक आधारभूत चरण।

- **उपस्थिति और सहभागिता** : नियमित उपस्थिति अनिवार्य है। विभागीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी सामुदायिक भावना और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती है।
- **अनुसंधान पद्धति प्रशिक्षण** : विद्वानों को अनुसंधान डिजाइन, डेटा विश्लेषण और थीसिस लेखन में गहराई से शामिल किया जाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे अपनी परियोजनाओं की जटिलताओं को संभालने के लिए सुसज्जित हैं।
 - इस चरण के दौरान असाइनमेंट, प्रोजेक्ट और परीक्षाएं तैयारी के महत्वपूर्ण मानक हैं।
- **यूजीसी अनुपालन** : यूजीसी मानदंडों के अनुसार, प्री-डॉक्टरल कोर्सवर्क पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है, और इसे सफलतापूर्वक पूरा करने में विफलता आपकी प्रगति में देरी या समाप्ति कर सकती है।

4. थीसिस लिखना

अनुसंधान यात्रा का हृदय।

- **डेटा संग्रह और फ़ील्डवर्क** : आपके विषय के आधार पर, इसमें सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अभिलेखीय शोध या डेटा माइनिंग शामिल हो सकते हैं। देरी से बचने के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाएँ।
- **थीसिस का प्रारूप तैयार करना** : लेखन एक पुनरावृत्तीय प्रक्रिया है। अपने पर्यवेक्षक के साथ नियमित परामर्श सुनिश्चित करें कि आप सही रास्ते पर बने रहें। एकरूपता और व्यावसायिकता बनाए रखने के लिए उद्धरण प्रबंधक और वर्ड प्रोसेसर जैसे उपकरणों का उपयोग करें।

- **विभागीय प्रस्तुतियाँ** : रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करने और अपने शोध-प्रबंध को और अधिक परिष्कृत करने के लिए विभागीय सेमिनारों में अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करें।

5. शैक्षणिक योगदान

अपने शोध को प्रकाशित करना और प्रस्तुत करना केवल आवश्यकता नहीं है, बल्कि अपने क्षेत्र में योगदान करने का अवसर भी है।

- **सम्मेलन पत्र** : राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुतिकरण से दृश्यता बढ़ती है और आलोचनात्मक प्रतिक्रिया मिलती है।
- **शोध प्रकाशन** : विद्वानों को समकक्ष-समीक्षित/यूजीसी-केयर-सूचीबद्ध/स्कोपस-सूचीबद्ध पत्रिकाओं में कम से कम दो लेख प्रकाशित करने होंगे। ये लेख आपके शोध की मौलिकता और प्रासंगिकता को प्रमाणित करते हैं। अपने पर्यवेक्षक के साथ संयुक्त लेखन अकादमिक अखंडता सुनिश्चित करता है।
 - **उदाहरण** : यदि आपका शोध "चुनावी व्यवहार में जातिगत गतिशीलता" पर केंद्रित है, तो सैद्धांतिक दृष्टिकोण पर एक शोधपत्र और अनुभवजन्य निष्कर्षों पर एक अन्य शोधपत्र प्रकाशित करने पर विचार करें।

6. प्री-सबमिशन और थीसिस सबमिशन

थीसिस को अंतिम रूप देना एक संरचित प्रक्रिया है जिसमें कई स्तरों पर जांच की जाती है।

- **प्री-सबमिशन वाइवा** : विद्वान अपना लगभग पूरा हो चुका काम विभागीय संकाय के एक पैनल के सामने प्रस्तुत करते हैं। इस सत्र से प्राप्त प्रतिक्रिया आपके शोध प्रबंध की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अमूल्य है।
- **साहित्यिक चोरी की जाँच** : सत्यनिष्ठा से समझौता नहीं किया जा सकता। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपका काम नैतिक मानकों का पालन करता है, साहित्यिक चोरी की रिपोर्ट प्राप्त करें।
- **औपचारिक अनुमोदन** : प्रस्तुत करने से पहले अपने पर्यवेक्षक, विभागाध्यक्ष और डीन से अनुमोदन प्राप्त करें।

7. अंतिम मौखिक परीक्षा

वर्षों की कड़ी मेहनत का परिणाम।

- **रिसर्च डिग्री कमेटी (आरडीसी)** से अनुमोदन प्राप्त करने के बाद , विद्वान एक सार्वजनिक मौखिक सत्र में विशेषज्ञों के पैनल के समक्ष अपने शोध-प्रबंध का बचाव करते हैं।
 - **तैयारी का सुझाव** : ऐसे प्रश्नों की अपेक्षा करें जो आपके ज्ञान की गहराई और आपके निष्कर्षों के निहितार्थों का परीक्षण करें। अपने उत्तर संक्षिप्त और व्यापक रखें।
-

सफलता के लिए पेशेवर सुझाव

1. **समय प्रबंधन** : व्यक्तिगत स्वास्थ्य की उपेक्षा किए बिना पाठ्यक्रम, फील्डवर्क और लेखन के लिए समय आवंटित करें।
 2. **नेटवर्किंग** : अपने क्षेत्र के विद्वानों और शिक्षाविदों से जुड़ने के लिए सेमिनारों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों में भाग लें।
 3. **दस्तावेज़ीकरण** : अपनी शोध गतिविधियों, पत्राचार और फीडबैक का सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड बनाए रखें।
 4. **अनुकूलनशीलता** : पर्यवेक्षक की प्रतिक्रिया या नए निष्कर्षों के आधार पर अपने शोध प्रबंध की संरचना या तर्कों को संशोधित करने के लिए तैयार रहें।
 5. **लचीलापन** : पीएचडी की यात्रा चुनौतीपूर्ण है, लेकिन बेहद फायदेमंद भी। केंद्रित और प्रेरित रहें।
-

इन चरणों की स्पष्ट रूपरेखा के साथ, इच्छुक पीएचडी छात्र अपनी शैक्षणिक यात्रा को आत्मविश्वास और स्पष्टता के साथ आगे बढ़ा सकते हैं। प्रत्येक चरण पिछले चरण पर आधारित होता है, जिसका समापन राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में एक सशक्त योगदान के रूप में होता है।

खंड 2: सामान्य स्वरूपण दिशानिर्देश

एक परिष्कृत और पेशेवर थीसिस तैयार करना: प्रारूपण संबंधी आवश्यक बातें

एक अच्छी तरह से लिखा गया शोध-प्रबंध केवल विषय-वस्तु पर ही निर्भर नहीं करता; बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि उसे कैसे प्रस्तुत किया गया है। सामान्य स्वरूपण दिशानिर्देशों का पालन करने से एकरूपता, पठनीयता और व्यावसायिकता सुनिश्चित होती है, जिसका आपके काम पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में पीएचडी शोध-प्रबंधों के लिए स्वरूपण आवश्यकताओं का विस्तृत और आसानी से समझने योग्य विवरण यहाँ दिया गया है।

1. सामान्य लेआउट

यह अनुभाग मानक पृष्ठ सेटअप को परिभाषित करता है, जिससे पूरे दस्तावेज़ में एकरूपता सुनिश्चित होती है।

- **कागज़ का आकार :** **A4 (8.27 x 11.69 इंच)** का कागज़ इस्तेमाल करें। यह आकार शैक्षणिक और व्यावसायिक दस्तावेज़ों के लिए सर्वत्र स्वीकार्य है।
- **मार्जिन :**
 - चारों तरफ (ऊपर, नीचे, बाएं और दाएं) **1 इंच (2.54 सेमी)** का मार्जिन बनाए रखें ।
 - एकसमान मार्जिन एक साफ, सममित उपस्थिति प्रदान करते हैं, जो बाइंडिंग और पठनीयता के लिए आवश्यक है।
- **फ़ॉन्ट शैली और आकार :**
 - **अंग्रेजी माध्यम :**
 - पाठ्य सामग्री: पठनीयता और व्यावसायिक रूप के लिए **टाइम्स न्यू रोमन** या **एरियल** ।
 - फ़ॉन्ट आकार:
 - मुख्य पाठ: **12 अंक** .
 - शीर्षक: **14 पॉइंट, बोल्ड** .

- हिंदी माध्यम :
 - पाठ: **कृति देव 010 या मंगल** , क्योंकि ये व्यापक रूप से संगत यूनिकोड-आधारित फ़ॉन्ट हैं।
 - फ़ॉन्ट आकार:
 - मुख्य पाठ: **14 अंक** .
 - शीर्षक: **16 पॉइंट, बोल्ड** .
- पंक्ति रिक्ति :
 - मुख्य पाठ: **1.5 स्पेसिंग** आसानी से पढ़ने और एनोटेशन की सुविधा देता है।
 - ब्लॉक उद्धरण, फुटनोट और संदर्भ: मुख्य पाठ से उन्हें अलग करने के लिए **एकल स्पेसिंग** ।
- संरेखण :
 - मुख्य पाठ: बाएं और दाएं दोनों मार्जिन पर साफ, संरेखित लुक के लिए **जस्टिफाई** किया गया है ।
 - अध्याय शीर्षक: **केंद्र -संरेखित** , एक नए अनुभाग की शुरुआत पर जोर देते हुए।
- पृष्ठ क्रमांकन :
 - प्रारंभिक अनुभागों (जैसे, आभार, सार) के लिए **रोमन अंकों** (i , ii, iii) का उपयोग करें ।
 - पहले अध्याय से शुरू करते हुए **अरबी अंकों** (1, 2, 3) पर जाएँ ।

2. शीर्षक और उपशीर्षक

उचित रूप से संरचित शीर्षक पाठकों को विषय-वस्तु के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं।

- अध्याय शीर्षक :
 - छोटे अक्षरों और बोल्ड का प्रयोग करें (उदाहरण के लिए, **अध्याय 1: परिचय**) ।
- उपशीर्षक :

- स्पष्टता के लिए क्रमांकित प्रणाली का पालन करें (उदाहरण के लिए, **1.1 पृष्ठभूमि , 1.1.1 विशिष्ट फोकस**)।
- सभी उपशीर्षकों में फ्रॉन्ट शैली और आकार में एकरूपता सुनिश्चित करें।

- **पदानुक्रम :**

- उपशीर्षकों के विभिन्न स्तरों के लिए अलग-अलग प्रारूपों का उपयोग करें , लेकिन प्रत्येक स्तर पर एकरूपता बनाए रखें।

3. तालिकाएँ और आंकड़े

तालिकाओं और आंकड़ों जैसे दृश्य सहायक उपकरण समझ को बढ़ाते हैं, लेकिन उनका प्रारूप सावधानीपूर्वक तैयार किया जाना चाहिए।

- **स्थिति निर्धारण :**

- संतुलित उपस्थिति के लिए पृष्ठ पर तालिकाओं और आंकड़ों को केंद्र में रखें ।

- **शीर्षक और लेबल :**

- स्पष्ट, वर्णनात्मक शीर्षक शामिल करें (उदाहरण के लिए, **तालिका 1: मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक कारक**)।
- सुनिश्चित करें कि प्रत्येक तालिका या आकृति पर संगत लेबल और संख्या हो।

- **अनुक्रमिक क्रमांकन :**

- तालिकाएँ: **तालिका 1, तालिका 2** , आदि के रूप में क्रमांकित।
- आंकड़े: **चित्र 1, चित्र 2** , आदि के रूप में क्रमांकित।

- **प्लेसमेंट :**

- तालिकाओं या आंकड़ों को यथासंभव पाठ में उनके संदर्भ के करीब डालें।

- **स्रोत का श्रेय :**

- यदि लागू हो तो हमेशा तालिका या आंकड़े के नीचे स्रोत का उल्लेख करें।

4. प्रारंभिक खंड

प्रारंभिक पृष्ठ थीसिस का स्वर और संरचना निर्धारित करते हैं। प्रत्येक अनुभाग को व्यवस्थित रूप से प्रारूपित किया जाना चाहिए।

1. **शीर्षक पेज :**

- रोकना:
 - पूर्ण थीसिस शीर्षक.
 - विद्वान का नाम.
 - विभाग का नाम.
 - कथन: “ [डिग्री का नाम] की डिग्री के लिए आवश्यकताओं की आंशिक पूर्ति में प्रस्तुत किया गया” ।
 - पर्यवेक्षक का नाम और पदनाम.
 - प्रस्तुतीकरण वर्ष.

2. **अमूर्त :**

- सीमा: **250 शब्द** .
- विषय-वस्तु: समस्या, उद्देश्य, कार्यप्रणाली, निष्कर्ष और महत्व का संक्षेप में सारांश प्रस्तुत करें।
- शब्दजाल से बचें; स्पष्टता पर ध्यान दें।

3. **आभार :**

- उन व्यक्तियों और संगठनों को धन्यवाद दें जिन्होंने आपके शोध का समर्थन किया।
- इसे संक्षिप्त किन्तु व्यक्तिगत रखें।

4. **विषयसूची :**

- अध्यायों, उपशीर्षकों और संबंधित पृष्ठ संख्याओं की सूची बनाएं।
- सुनिश्चित करें कि थीसिस के विकसित होने के साथ-साथ इसे अद्यतन किया जाता रहे।

5. **तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्त रूपों की सूची :**

- प्रत्येक तालिका या आकृति के लिए वर्णनात्मक शीर्षक और पृष्ठ संख्या शामिल करें।
- संक्षिप्ताक्षरों को उनके पूर्ण रूप के साथ वर्णानुक्रम में सूचीबद्ध किया जाना चाहिए।

5. मुख्य भाग के दिशानिर्देश

मुख्य पाठ को सभी अध्यायों में एकरूपता बनाए रखनी चाहिए।

- **अध्याय :**
 - प्रत्येक अध्याय को नये पृष्ठ से शुरू करें।
 - अध्याय शीर्षकों के लिए **मोटे, छोटे अक्षरों का** प्रयोग करें।
 - **पैराग्राफ :**
 - प्रत्येक नए पैराग्राफ को इंडेंट करें या उन्हें रिक्त पंक्ति से अलग करें।
 - **उद्धरण और फुटनोट :**
 - निर्दिष्ट उद्धरण शैली (APA, MLA, शिकागो, हार्वर्ड) का उपयोग करें।
 - पूरे दस्तावेज़ में प्रारूप में एकरूपता बनाए रखें।
-

6. हिंदी माध्यम के लिए अतिरिक्त दिशानिर्देश

हिंदी में अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने वाले विद्वानों को निम्नलिखित सुनिश्चित करना होगा:

- विभिन्न डिवाइसों पर अनुकूलता के लिए **मंगल जैसे यूनिकोड फॉन्ट का** उपयोग करें।
 - **फॉन्ट आकार :**
 - मुख्य पाठ: **14 अंक** .
 - शीर्षक: **16 अंक** .
 - गैर-हिंदी शब्दों का उचित लिप्यंतरण सुनिश्चित करें और प्रारूपण मानकों का पालन करें।
-

7. संदर्भ और परिशिष्ट

संदर्भ और परिशिष्ट, स्रोतों और पूरक सामग्रियों की एक व्यापक सूची प्रदान करके थीसिस को मूल्यवान बनाते हैं।

- **संदर्भ :**
 - निर्दिष्ट शैली (एपीए, एमएलए, शिकागो, या हार्वर्ड) का पालन करें।
 - लेखक के नाम के अनुसार वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करें।

- **परिशिष्ट :**

- सर्वेक्षण प्रश्नावली, साक्षात्कार प्रतिलेख, या अतिरिक्त चार्ट जैसे पूरक डेटा शामिल करें।
- प्रत्येक परिशिष्ट को क्रमिक रूप से शीर्षक दें (उदाहरण के लिए, **परिशिष्ट ए, परिशिष्ट बी**)।

8. सुसंगत स्वरूपण के लिए सुझाव

- फ़ॉर्मेटिंग स्वचालन के लिए **माइक्रोसॉफ्ट वर्ड स्टाइल्स** या **लेटेक्स** जैसे उपकरणों का उपयोग करें।
- दस्तावेज़ के विकसित होने के साथ-साथ विषय-सूची और तालिकाओं/आंकड़ों की सूची को नियमित रूप से अद्यतन करें।
- फ़ॉन्ट आकार, रिक्ति या संरेखण में असंगतता को पकड़ने के लिए पूरी तरह से प्रूफरीड करें।

कुंजी ले जाएं

फ़ॉर्मेटिंग सिर्फ़ एक बाद की बात नहीं है—यह आपके शोध-प्रबंध की पठनीयता और व्यावसायिकता का अभिन्न अंग है। इन दिशानिर्देशों का पालन करके, विद्वान यह सुनिश्चित करते हैं कि उनका काम शैक्षणिक मानकों पर खरा उतरे और एक स्थायी छाप छोड़े।

खंड 3: तालिकाएँ, आंकड़े और संक्षिप्त रूप

आसान संदर्भ के लिए दृश्य और संक्षिप्त तत्वों को व्यवस्थित करना

तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्त रूपों की सूची यह खंड पाठकों के लिए आपके शोध-प्रबंध में महत्वपूर्ण दृश्यों और शब्दावलियों को खोजने में एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। यह खंड चार्ट, ग्राफ़, तालिकाओं और संक्षिप्त शब्दों के लिए एक त्वरित संदर्भ प्रदान करता है, जिससे स्पष्टता और सुगमता सुनिश्चित होती है।

1. इस अनुभाग का उद्देश्य

1. नेविगेशन को सुव्यवस्थित करें :

- पाठकों को थीसिस में विशिष्ट दृश्यों या शब्दों को शीघ्रता से खोजने में सहायता करता है।

2. समझ बढ़ाएँ :

- सभी तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्ताक्षरों का समेकित दृश्य प्रदान करता है।

3. व्यावसायिकता को प्रतिबिंबित करें :

- थीसिस को व्यवस्थित करने में विस्तार पर ध्यान देना प्रदर्शित करता है।
-

2. इस अनुभाग के घटक

A. तालिकाओं की सूची

1. परिभाषा :

- थीसिस में शामिल सभी तालिकाओं की अनुक्रमिक सूची।

2. स्वरूपण :

- तालिका संख्या, शीर्षक और संबंधित पृष्ठ संख्या शामिल करें।

3. उदाहरण :

तालिका संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
तालिका नंबर एक	उत्तरदाताओं का सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल	25
तालिका 2	आय वर्ग के अनुसार मतदाता मतदान	38
टेबल तीन	मतदाता मतदान का प्रतिगमन विश्लेषण	45

बी. आंकड़ों की सूची

1. परिभाषा :

- थीसिस में प्रयुक्त सभी आंकड़ों, जैसे ग्राफ, चार्ट या मानचित्रों की अनुक्रमिक सूची।

2. स्वरूपण :

- चित्र संख्या, कैप्शन और पृष्ठ संख्या शामिल करें।

3. उदाहरण :

आकृति संख्या	कैप्शन	पृष्ठ संख्या
चित्र 1	मतदाता मतदान रुझान (2015–2023)	30
चित्र 2	सामाजिक-आर्थिक कारक और चुनावी व्यवहार	41
चित्र तीन	मतदान पैटर्न पर जातिगत गतिशीलता का प्रभाव	50

सी. संक्षिप्ताक्षरों की सूची

1. परिभाषा :

- थीसिस में प्रयुक्त सभी संक्षिप्त रूपों की शब्दावली, उनके पूर्ण रूपों सहित।

2. स्वरूपण :

- आसान पहुंच के लिए संक्षिप्ताक्षरों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करें।

3. उदाहरण :

संक्षेपाक्षर	पूर्ण प्रपत्र
ईसीआई	भारत निर्वाचन आयोग
एफपीटीपी	प्रथम-पास्ट-द-पोस्ट
विधायक	विधान सभा के सदस्य
एनजीओ	गैर सरकारी संगठन

3. प्रारूपण दिशानिर्देश

ए. लेआउट

1. सभी सूचियों के लिए एक समान प्रारूप का उपयोग करें।
2. संख्याओं, शीर्षकों और पृष्ठ संदर्भों का उचित संरेखण सुनिश्चित करें।

बी. संगति

1. सूचियों में दिए गए शीर्षकों और कैप्शनों का मिलान मुख्य पाठ से करें।
2. सत्यापित करें कि थीसिस में उल्लिखित सभी तालिकाएँ, आंकड़े और संक्षिप्ताक्षर शामिल हैं।

सी. प्लेसमेंट

1. सूची को विषय-सूची के बाद तथा थीसिस के मुख्य भाग से पहले रखें।
2. यदि शब्दावली विस्तृत है तो उसे तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्ताक्षरों की सूची से पहले रखें।

4. तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्ताक्षरों की सूची के लिए उदाहरण अनुभाग

तालिकाओं की सूची

- तालिका 1: उत्तरदाताओं का सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल पृष्ठ 25
- तालिका 2: आय वर्ग के अनुसार मतदाता मतदान पृष्ठ 38
- तालिका 3: मतदाता मतदान का प्रतिगमन विश्लेषण पृष्ठ 45

आंकड़ों की सूची

- चित्र 1: मतदाता मतदान रुझान (2015-2023) पृष्ठ 30
- चित्र 2: सामाजिक-आर्थिक कारक और चुनावी व्यवहार पृष्ठ 41
- चित्र 3: मतदान पैटर्न पर जातिगत गतिशीलता का प्रभाव पृष्ठ 50

संकेताक्षर की सूची

- ईसीआई: भारत निर्वाचन आयोग
- एफपीटीपी: फर्स्ट-पास्ट -द-पोस्ट
- विधायक: विधान सभा का सदस्य
- एनजीओ: गैर-सरकारी संगठन

5. इस अनुभाग को बनाने के लिए सुझाव

1. **वर्ड प्रोसेसिंग टूल्स का उपयोग करें :**
 - तालिकाओं और आंकड़ों की सूची बनाने के लिए एमएस वर्ड या लेटेक्स में स्वचालित उपकरणों का उपयोग करें।
2. **इसे अद्यतन रखें :**
 - दृश्य और संक्षिप्तीकरण जोड़ते, हटाते या संशोधित करते समय सूची को संशोधित करें।
3. **शीर्षकों और संख्याओं की दोबारा जांच करें :**
 - सटीकता के लिए सुनिश्चित करें कि सभी कैप्शन मुख्य पाठ से मेल खाते हों।

6. इस अनुभाग के लाभ

1. **उन्नत पाठक अनुभव :**
 - पाठकों को संपूर्ण दस्तावेज़ को पलटे बिना दृश्यों और शब्दों का पता लगाने में सक्षम बनाता है।
2. **बेहतर संगठन :**
 - थीसिस की संरचित और पेशेवर प्रस्तुति को दर्शाता है।

इस अनुभाग के लिए नमूना प्रारंभिक पैराग्राफ

"निम्नलिखित अनुभाग इस शोध प्रबंध में प्रयुक्त तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्ताक्षरों की एक व्यापक सूची प्रदान करता है। ये सूचियाँ महत्वपूर्ण डेटा, दृश्यों और शब्दावलियों तक त्वरित पहुँच को सुगम बनाने के लिए डिज़ाइन की गई हैं, जिससे एक सहज पठन अनुभव सुनिश्चित होता है।"

7. तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्ताक्षरों की सूची के लिए चेकलिस्ट

1. क्या आपने थीसिस में उल्लिखित सभी तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्ताक्षरों को शामिल किया है?
 2. क्या शीर्षक और कैप्शन मुख्य पाठ के अनुरूप हैं?
 3. क्या पृष्ठ संख्या का संदर्भ सही है?
 4. क्या संक्षिप्ताक्षर वर्णानुक्रम में सूचीबद्ध हैं?
-

इस अनुभाग में तालिकाओं, आंकड़ों और संक्षिप्ताक्षरों को व्यवस्थित करके, आप अपने शोध-प्रबंध की पहुँच और उपयोगिता को बढ़ाते हैं, तथा पाठकों और मूल्यांकनकर्ताओं पर एक पेशेवर प्रभाव छोड़ते हैं।

खंड 4: परिचय

अपने शोध-प्रबंध के लिए एक आकर्षक शुरुआत तैयार करना

भूमिका आपके शोध प्रबंध का प्रवेश द्वार है। यह विषयवस्तु का स्वर निर्धारित करती है, संदर्भ प्रदान करती है और शोध के महत्व को स्थापित करती है। एक सुव्यवस्थित भूमिका न केवल पाठक का ध्यान आकर्षित करती है, बल्कि शोध यात्रा की नींव भी रखती है। यह खंड राजनीति विज्ञान के विद्वानों को एक प्रभावी भूमिका के तत्वों से परिचित कराएगा।

1. पृष्ठभूमि जानकारी

परिचय की शुरुआत एक व्यापक पृष्ठभूमि से होती है जो शोध विषय को प्रासंगिक बनाती है। इस खंड में राजनीति विज्ञान से संबंधित ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और सामाजिक आयामों को शामिल किया जाना चाहिए।

- **उद्देश्य** : शोध समस्या को समझने के लिए आधार प्रदान करना।
 - **मुख्य तत्व** :
 - ऐतिहासिक घटनाक्रम जो इस मुद्दे को रेखांकित करते हैं।
 - सैद्धांतिक बहस और विवाद.
 - सामाजिक या राजनीतिक प्रासंगिकता।
 - **उदाहरण** : यदि आपका शोध मतदाता व्यवहार पर केंद्रित है, तो इस प्रकार से शुरू करें:
 - "चुनाव लोकतंत्र की आधारशिला हैं, जो नागरिकों को शासन को प्रभावित करने की शक्ति प्रदान करते हैं। ग्रामीण भारत में, मतदान के रुझान सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को दर्शाते हैं, फिर भी राजनीति विज्ञान साहित्य में इनका अभी तक अध्ययन नहीं किया गया है।"
-

2. शोध समस्या/प्रश्न

शोध की समस्या या प्रश्न को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना ही परिचय का मूल है। यहीं पर विद्वान यह परिभाषित करता है कि शोध का उद्देश्य क्या है।

- **तैयार करने के चरण :**

1. मौजूदा साहित्य में अंतराल की पहचान करें।
2. इन अंतरालों को दूर करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालें।
3. शोध प्रश्न को संक्षिप्त रूप से तैयार करें।

- **उदाहरण :**

- "ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक निर्धारक क्या हैं?"
- "जाति-आधारित लामबंदी स्थानीय स्तर पर राजनीतिक भागीदारी को किस प्रकार आकार देती है?"

3. परिकल्पना या अपेक्षित परिणाम

अनुसंधान की प्रकृति - मात्रात्मक या गुणात्मक - के आधार पर यह खंड परिकल्पना का परिचय देता है या अपेक्षित परिणामों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

- **मात्रात्मक अनुसंधान :**

- परीक्षण योग्य परिकल्पनाएँ तैयार करें।
- उदाहरण परिकल्पनाएँ:
 - H1: "उच्च आय स्तर ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्रों में मतदाता मतदान को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।"
 - आर्थिक स्थिति की तुलना में जातिगत पहचान का मतदान व्यवहार पर अधिक प्रभाव पड़ता है।"

- **गुणात्मक अनुसंधान :**

- सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि या प्रारंभिक अवलोकनों के आधार पर अपेक्षित परिणाम तैयार करें।
- उदाहरण:
 - "यह अध्ययन मतदाता भागीदारी में प्रमुख कारकों के रूप में सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और स्थानीय नेतृत्व गतिशीलता के बीच परस्पर क्रिया को उजागर करने की आशा करता है।"

4. अध्ययन के उद्देश्य

उद्देश्य अनुसंधान के दायरे और फोकस को परिभाषित करते हैं। इन्हें सामान्य और विशिष्ट में वर्गीकृत किया जा सकता है।

- सामान्य उद्देश्य :

- अध्ययन के सार को दर्शाने वाला व्यापक उद्देश्य।
- उदाहरण: "ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना।"

- विशिष्ट उद्देश्य :

- सामान्य उद्देश्य को मापने योग्य घटकों में विभाजित करें।
- उदाहरण:
 - मतदाता भागीदारी में आय और शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करें।
 - ग्रामीण चुनावों में जाति-आधारित राजनीतिक लामबंदी का परीक्षण करें।
 - मतदाता वरीयताओं पर राजनीतिक अभियानों के प्रभाव की जांच करें।

5. महत्व और प्रेरणा

यह खंड अनुसंधान के महत्व और इसे करने के लिए विद्वान की व्यक्तिगत प्रेरणा पर प्रकाश डालता है।

- यह अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?

- सैद्धांतिक महत्व:
 - उभरते लोकतंत्रों, विशेषकर ग्रामीण परिवेशों में मतदाता व्यवहार को समझने में योगदान देता है।"
- व्यावहारिक अनुप्रयोगों:
 - "इस शोध से प्राप्त अंतर्दृष्टि नीति निर्माताओं को समावेशी मतदाता आउटरीच कार्यक्रम तैयार करने में मार्गदर्शन कर सकती है।"

- व्यक्तिगत प्रेरणा :

- विषय के चयन की प्रेरणा क्या थी, यह बताएं।

- उदाहरण: "एक ग्रामीण समुदाय में पले-बढ़े होने के कारण, मैंने राजनीतिक भागीदारी को आकार देने वाली सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को प्रत्यक्ष रूप से देखा। इसने मुझे अकादमिक जाँच-पड़ताल के माध्यम से इन गतिशीलताओं का पता लगाने के लिए प्रेरित किया।"

6. थीसिस की संरचना

थीसिस का एक रोडमैप प्रस्तुत करें, जिसमें प्रत्येक अध्याय की विषयवस्तु का सारांश दिया गया हो। इससे पाठकों को दस्तावेज़ को आसानी से समझने में मदद मिलती है।

• उदाहरण संरचना :

- **अध्याय 1 परिचय :**
 - अनुसंधान समस्या, उद्देश्य और महत्व का अवलोकन।
- **अध्याय 2: साहित्य समीक्षा :**
 - मौजूदा शोध, सैद्धांतिक रूपरेखा और पहचाने गए अंतराल का सारांश।
- **अध्याय 3: कार्यप्रणाली :**
 - अनुसंधान डिजाइन, डेटा संग्रहण और विश्लेषण विधियाँ।
- **अध्याय 4: परिणाम और विश्लेषण :**
 - निष्कर्षों की प्रस्तुति और व्याख्या।
- **अध्याय 5: चर्चा :**
 - निष्कर्षों के निहितार्थ, सैद्धांतिक योगदान और व्यावहारिक सिफारिशें।
- **अध्याय 6: निष्कर्ष :**
 - प्रमुख निष्कर्षों का सारांश, क्षेत्र में योगदान, तथा भावी अनुसंधान के लिए सुझाव।

7. प्रभावी परिचय लिखने के लिए सुझाव

1. हुक से शुरू करें :

- पाठक को आकर्षित करने के लिए किसी रोचक तथ्य, आंकड़े या किस्से का प्रयोग करें।

- उदाहरण: "2019 के आम चुनावों में, ग्रामीण भारत में 68% मतदान हुआ, फिर भी एक महत्वपूर्ण लैंगिक असमानता बनी हुई है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी पिछड़ रही है।"

2. स्पष्ट एवं संक्षिप्त रहें :

- अत्यधिक तकनीकी शब्दावली या लंबे-चौड़े विषयांतर से बचें।
- स्पष्टता और परिशुद्धता पर ध्यान दें।

3. तार्किक प्रवाह बनाए रखें :

- पृष्ठभूमि, समस्या विवरण, उद्देश्यों और महत्व के बीच निर्बाध संक्रमण सुनिश्चित करें।

4. अपने दर्शकों के अनुरूप बनाएं :

- अकादमिक समीक्षकों और सामान्य पाठकों दोनों को ध्यान में रखकर लिखें।

नमूना प्रारंभिक पैराग्राफ

चुनाव लोकतंत्र का उत्सव हैं, फिर भी वे अक्सर समाज के भीतर सामाजिक-आर्थिक विभाजन को दर्शाते हैं। भारत में, ग्रामीण मतदाता राजनीतिक परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, फिर भी उनकी भागीदारी कई कारकों से प्रभावित होती है—आर्थिक असमानताएँ, जातिगत पदानुक्रम और राजनीतिक अभियानों की पहुँच। यह अध्ययन ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक निर्धारकों का गहन अध्ययन करता है, जिसका उद्देश्य सैद्धांतिक धारणाओं और ज़मीनी हकीकतों के बीच की खाई को पाटना है।

इन तत्वों में निपुणता प्राप्त करके, विद्वान एक ऐसा परिचय तैयार कर सकते हैं जो आकर्षित करे, जानकारी प्रदान करे, तथा एक सशक्त शोध अध्ययन के लिए मंच तैयार करे।

खंड 5: साहित्य समीक्षा

अपने शोध के लिए एक मजबूत आधार तैयार करना

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध प्रबंध का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो मौजूदा शोध का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है और आपके अध्ययन की नींव रखता है। यह क्षेत्र से आपकी परिचितता को प्रदर्शित करता है, साहित्य में कमियों की पहचान करता है, और आपके शोध की आवश्यकता को उचित ठहराता है।

1. साहित्य समीक्षा का उद्देश्य

साहित्य समीक्षा के प्राथमिक लक्ष्य हैं:

1. पिछले शोध का सारांश दें :

- अपने विषय से संबंधित अध्ययनों का संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करें।
- प्रमुख निष्कर्षों, कार्यप्रणालियों और निष्कर्षों पर प्रकाश डालें।

2. अंतराल और विवादों की पहचान करें :

- उन क्षेत्रों को चिह्नित करें जहां मौजूदा शोध अधूरा या विरोधाभासी है।
- व्यवहार में जाति की भूमिका का पता लगाया है , ग्रामीण संदर्भों में इसके प्रभाव पर बहुत कम ध्यान दिया गया है।"

3. एक सैद्धांतिक ढांचा विकसित करें :

- उन सिद्धांतों और अवधारणाओं को एकीकृत करें जो आपके अध्ययन का मार्गदर्शन करेंगे।

4. अपने शोध का औचित्य सिद्ध करें :

- प्रदर्शित करें कि आपका कार्य किस प्रकार क्षेत्र में योगदान देता है तथा अनसुलझे मुद्दों का समाधान करता है।
-

2. साहित्य समीक्षा की संरचना

स्पष्टता और सुसंगतता बनाए रखने के लिए एक प्रभावी साहित्य समीक्षा व्यवस्थित रूप से आयोजित की जाती है।

क. परिचय

- संक्षेप में समीक्षा के केंद्र बिंदु का परिचय दें।
- साहित्य का चयन करने के लिए प्रयुक्त मानदंड बताएं (जैसे, समकक्ष-समीक्षित पत्रिकाएं, विशिष्ट समय-सीमा, भौगोलिक फोकस)।

उदाहरण : "यह समीक्षा ग्रामीण भारत में मतदाता व्यवहार पर अध्ययनों की जांच करती है , जो 2010 और 2023 के बीच प्रकाशित सामाजिक-आर्थिक निर्धारकों और जातिगत गतिशीलता पर केंद्रित है।"

बी. विषयगत या कालानुक्रमिक संगठन

साहित्य को इस तरह व्यवस्थित करें जो आपके शोध के लिए सार्थक हो।

1. विषयगत दृष्टिकोण :

- सामान्य विषयों या अवधारणाओं पर आधारित समूह अध्ययन।
- उदाहरण: "अध्ययनों को तीन विषयों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है: सामाजिक-आर्थिक कारक, राजनीतिक अभियान और जातिगत प्रभाव।"

2. कालानुक्रमिक दृष्टिकोण :

- समय के साथ अनुसंधान के विकास का पता लगाएं।
- उदाहरण: "प्रारंभिक अध्ययनों में आर्थिक प्रोत्साहनों पर ध्यान केंद्रित किया गया था, जबकि हाल के शोध व्यावहारिक और सांस्कृतिक गतिशीलता की ओर स्थानांतरित हो गए हैं।"

c. शामिल करने के लिए प्रमुख तत्व

1. प्रासंगिक साहित्य का अवलोकन :

- अपने शोध क्षेत्र में मौलिक कार्यों और हाल के अध्ययनों का सारांश प्रस्तुत करें।
- उदाहरण: "गुप्ता (2015) का तर्क है कि आय असमानताएं मतदाता मतदान को प्रभावित करती हैं, जबकि सिंह (2018) स्थानीय नेतृत्व की भूमिका पर जोर देते हैं।"

2. सिद्धांत और अवधारणाएँ :

- शोध को सूचित करने वाले सैद्धांतिक ढाँचों पर चर्चा करें।
- उदाहरण: "तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत यह मानता है कि मतदाता स्व-हित में कार्य करते हैं, लेकिन व्यवहार सिद्धांत सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंडों के प्रभाव को उजागर करते हैं।"

3. अंतराल और विवाद :

- उन क्षेत्रों की पहचान करें जिनमें आगे जांच की आवश्यकता है।
- उदाहरण: "शहरी मतदान पैटर्न पर व्यापक ध्यान देने के बावजूद, ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्रों में जातिगत गतिशीलता की भूमिका पर सीमित शोध हुआ है।"

4. सैद्धांतिक रूपरेखाओं का एकीकरण :

- एक ऐसा ढांचा प्रस्तावित करें जो मौजूदा अध्ययनों से प्राप्त अंतर्दृष्टि को सम्मिलित करे।
- आर्थिक प्रोत्साहनों और सामाजिक मानदंडों के बीच परस्पर क्रिया का पता लगाने के लिए तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत को व्यवहार सिद्धांत के साथ एकीकृत करता है।"

डी. निष्कर्ष

समीक्षा से प्राप्त प्रमुख निष्कर्षों का सारांश प्रस्तुत करें तथा इस बात पर प्रकाश डालें कि आपका अध्ययन पहचाने गए अंतरालों को किस प्रकार संबोधित करेगा।

उदाहरण : "यह समीक्षा ग्रामीण भारत में जाति और राजनीतिक अभियानों के अंतर्संबंध पर शोध की कमी को उजागर करती है। इस अंतर को दूर करके, इस अध्ययन का उद्देश्य मतदाता व्यवहार की अधिक सूक्ष्म समझ में योगदान करना है।"

3. साहित्य समीक्षा करने के चरण

1. अपना दायरा परिभाषित करें :

- समीक्षा किए जाने वाले साहित्य के विषय, समय-सीमा और भौगोलिक फोकस को निर्दिष्ट करें।

2. प्रासंगिक साहित्य की खोज करें :

- JSTOR, Scopus और Google Scholar जैसे शैक्षणिक डेटाबेस का उपयोग करें।

- राजनीति विज्ञान में प्रमुख पत्रिकाओं की पहचान करें, जैसे कि *इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस*।

3. स्रोतों का मूल्यांकन करें :

- प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा समीक्षित लेखों और पुस्तकों को प्राथमिकता दें।
- अपने शोध प्रश्न की नवीनता और प्रासंगिकता की जांच करें।

4. नोट ले लो :

- प्रत्येक स्रोत के लिए प्रमुख निष्कर्षों, कार्यप्रणालियों और अंतरालों का सारांश प्रस्तुत करें।
- अपने नोट्स को विषयगत या कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें।

5. सूचना का संश्लेषण करें :

- अध्ययनों में पैटर्न, सहमति और असहमति की तलाश करें।
- अध्ययनों को अलग-अलग सूचीबद्ध करने से बचें; इसके बजाय, उन्हें एक सुसंगत कथा में एकीकृत करें।

4. साहित्य का दृश्य प्रतिनिधित्व

दृश्य सहायता का उपयोग साहित्य में जटिल संबंधों या प्रवृत्तियों को संक्षेप में प्रस्तुत करने में मदद कर सकता है।

- **फ्लोचार्ट** : सैद्धांतिक संबंधों का मानचित्रण करें।
 - उदाहरण: दिखाएँ कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति, जातिगत गतिशीलता और राजनीतिक अभियान मतदाता व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं।
- **तालिकाएँ** : अध्ययनों की उनके फोकस, विधियों और निष्कर्षों के आधार पर तुलना करें।
 - उदाहरण:

अध्ययन	केंद्र	क्रियाविधि	मुख्य निष्कर्ष
गुप्ता (2015)	सामाजिक-आर्थिक कारक	सर्वे	आय का मतदान के साथ सकारात्मक संबंध है।
सिंह (2018)	जाति की भूमिका	क्षेत्र	जातिगत पहचान मतदान व्यवहार को आकार

		साक्षात्कार	देती है।
--	--	-------------	----------

5. बचने योग्य सामान्य नुकसान

1. फोकस की कमी :

- असंबंधित अध्ययनों की समीक्षा करने से बचें; अपने शोध उद्देश्यों के साथ संरेखित रहें।

2. अत्यधिक विवरण :

- अध्ययनों का संक्षेप में सारांश तैयार करें; प्रत्येक विवरण के बजाय प्रासंगिकता पर ध्यान केंद्रित करें।

3. पक्षपात :

- संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करें, जिसमें ऐसे अध्ययन भी शामिल हों जो आपकी परिकल्पना का खंडन कर सकते हों।

6. साहित्य समीक्षा लिखने के लिए उपकरण

• संदर्भ प्रबंधक :

- स्रोतों को व्यवस्थित करने और उद्धृत करने के लिए **ज़ोटेरो** , **मेंडली** या **एंडनोट** जैसे उपकरणों का उपयोग करें ।

• लेखन सॉफ्टवेयर :

- प्रारूपण के लिए **माइक्रोसॉफ्ट वर्ड** या **लेटेक्स** का उपयोग करें ।

• साहित्यिक चोरी जाँचकर्ता :

- **टर्निटिन** या **ग्रामरली** जैसे उपकरणों का उपयोग करके मौलिकता सुनिश्चित करें ।

साहित्य समीक्षा के लिए नमूना आरंभ

व्यवहार की गतिशीलता ने लंबे समय से राजनीतिक वैज्ञानिकों को आकर्षित किया है, और कई अध्ययनों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति, राजनीतिक अभियानों और सांस्कृतिक मानदंडों के प्रभावों का पता लगाया गया है। हालाँकि, साहित्य अभी भी खंडित है, विशेष रूप से ग्रामीण भारत के संदर्भ में, जहाँ जातिगत गतिशीलता और स्थानीय नेतृत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह समीक्षा मौजूदा शोध को संश्लेषित

करती है ताकि कमियों को उजागर किया जा सके और इन प्रभावों की जाँच के लिए एक रूपरेखा प्रस्तावित की जा सके।

मौजूदा शोध का आलोचनात्मक मूल्यांकन और संश्लेषण करके, विद्वान एक मजबूत साहित्य समीक्षा तैयार कर सकते हैं जो न केवल उनके अध्ययन का समर्थन करती है बल्कि राजनीति विज्ञान के व्यापक क्षेत्र में भी योगदान देती है।

खंड 6: कार्यप्रणाली

एक ठोस अनुसंधान ढांचा तैयार करना

कार्यप्रणाली अनुभाग उन रणनीतियों, उपकरणों और प्रक्रियाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिनका उपयोग आप डेटा एकत्र करने, उसका विश्लेषण करने और उसकी व्याख्या करने के लिए करेंगे। यह आपके शोध प्रश्नों और परिणामों के बीच सेतु का काम करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि आपका अध्ययन एक व्यवस्थित और पारदर्शी दृष्टिकोण पर आधारित हो।

1. कार्यप्रणाली का महत्व

यह कार्यप्रणाली विश्वसनीय शोध का आधार प्रदान करती है। एक सुपरिभाषित कार्यप्रणाली:

1. डेटा संग्रहण और विश्लेषण में **स्थिरता और विश्वसनीयता** सुनिश्चित करता है।
 2. शोध प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आपके दृष्टिकोण की **कठोरता और वैधता को** प्रदर्शित करता है।
 3. पाठकों को यह समझने में सहायता करता है कि निष्कर्ष कैसे निकाले जाते हैं, जिससे वे आपके निष्कर्षों का मूल्यांकन कर सकें।
-

2. कार्यप्रणाली अनुभाग के प्रमुख घटक

एक मजबूत कार्यप्रणाली अनुभाग में निम्नलिखित तत्व शामिल हैं:

ए. अनुसंधान डिजाइन

- **परिभाषा** : आपके शोध का खाका, जिसमें यह निर्दिष्ट किया जाता है कि यह अन्वेषणात्मक, वर्णनात्मक या व्याख्यात्मक है।
- **प्रकार** :
 - **गुणात्मक** : अवधारणाओं, विचारों या अनुभवों को समझने पर ध्यान केंद्रित करता है।
 - **मात्रात्मक** : इसमें संख्यात्मक डेटा और सांख्यिकीय विश्लेषण शामिल है।
 - **मिश्रित विधियाँ** : समग्र दृष्टिकोण के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक दृष्टिकोणों को जोड़ती हैं।

- **उदाहरण :**

- "यह अध्ययन ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के सामाजिक-आर्थिक निर्धारकों का पता लगाने के लिए मिश्रित पद्धति दृष्टिकोण को अपनाता है, जिसमें सर्वेक्षण डेटा को गहन साक्षात्कारों के साथ एकीकृत किया गया है।"

बी. डेटा संग्रह विधियाँ

- **सर्वेक्षण :**

- बड़ी जनसंख्या से मानकीकृत डेटा एकत्र करने के लिए आदर्श।
- उदाहरण: "ग्रामीण जिलों में 500 मतदाताओं को 20-आइटम प्रश्नावली वितरित की गई।"

- **साक्षात्कार :**

- व्यक्तिगत दृष्टिकोण में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोगी।
- उदाहरण: "जाति-आधारित लामबंदी को समझने के लिए 50 स्थानीय नेताओं के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए।"

- **अवलोकन :**

- वास्तविक समय में व्यवहार को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड करना शामिल है।

- **द्वितीयक डेटा :**

- सरकारी रिपोर्ट, जर्नल लेख और ऐतिहासिक अभिलेखागार जैसे मौजूदा स्रोतों से डेटा को संदर्भित करता है।
- उदाहरण: " मतदाता मतदान के रुझान के लिए चुनाव आयोग की रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया।"

सी. नमूनाकरण तकनीक

- **परिभाषा :** आपके अध्ययन के लिए प्रतिभागियों या डेटा बिंदुओं का चयन करने की प्रक्रिया।
- **प्रकार :**

- **यादृच्छिक नमूनाकरण** : यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को चयन का समान अवसर मिले।
- **स्तरीकृत नमूनाकरण** : प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए जनसंख्या को उपसमूहों (जैसे, जाति या लिंग के आधार पर) में विभाजित करता है।
- **उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण** : उन प्रतिभागियों पर ध्यान केंद्रित करता है जो अध्ययन के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक हैं।

• **उदाहरण :**

- *“आयु, लिंग और जाति समूहों में विविधता सुनिश्चित करने के लिए एक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग किया गया।”*

डी. डेटा विश्लेषण प्रक्रियाएं

आप अपने डेटा का विश्लेषण कैसे करते हैं यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपका शोध गुणात्मक है या मात्रात्मक।

• **मात्रात्मक विश्लेषण :**

- SPSS, R, या Excel जैसे सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग करें।
- तकनीकों में शामिल हैं:
 - वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, माधिका, मानक विचलन)।
 - अनुमानात्मक सांख्यिकी (प्रतिगमन विश्लेषण, परिकल्पना परीक्षण)।
- उदाहरण: *“आय और मतदाता मतदान के बीच संबंध का आकलन करने के लिए प्रतिगमन विश्लेषण किया गया था।”*

• **गुणात्मक विश्लेषण :**

- विषयगत कोडिंग या कथात्मक विश्लेषण का उपयोग करें।
- उदाहरण: *“मतदाताओं की प्रेरणाओं में आवर्ती पैटर्न की पहचान करने के लिए साक्षात्कार प्रतिलेखों में विषयगत कोडिंग लागू की गई थी।”*

• **मिश्रित-विधि विश्लेषण :**

- सांख्यिकीय परीक्षणों को गुणात्मक व्याख्या के साथ संयोजित करें।

- उदाहरण: “वैधता सुनिश्चित करने के लिए सर्वेक्षण के परिणामों को साक्षात्कार निष्कर्षों के साथ त्रिकोणीय बनाया गया।”

ई. नैतिक विचार

अनुसंधान की अखंडता बनाए रखने के लिए नैतिक प्रथाएं अभिन्न हैं।

- **सूचित सहमति :**

- प्रतिभागियों को अध्ययन का उद्देश्य समझना होगा और स्वेच्छा से सहमति देनी होगी।
- उदाहरण: “प्रतिभागियों ने अध्ययन के उद्देश्यों और अपने अधिकारों को रेखांकित करते हुए एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए।”

- **गोपनीयता :**

- प्रतिभागियों की पहचान और डेटा की सुरक्षा करें।
- उदाहरण: “प्रत्येक प्रतिभागी के लिए अद्वितीय कोड का उपयोग करके डेटा को गुमनाम किया गया था।”

- **पूर्वाग्रह से बचाव :**

- डेटा संग्रहण और विश्लेषण में तटस्थता सुनिश्चित करें।

3. अनुसंधान उपकरण

डेटा एकत्र करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों या यंत्रों का विवरण दें।

- **सर्वेक्षण और प्रश्नावली :**

- शोध उद्देश्यों की प्रासंगिकता सुनिश्चित करते हुए स्पष्ट एवं संक्षिप्त प्रश्न शामिल करें।
- उदाहरण:
 - प्रश्न: “1-5 के पैमाने पर, आपके मतदान निर्णय को निर्धारित करने में आपकी जातिगत पहचान कितनी प्रभावशाली है?”

- **साक्षात्कार मार्गदर्शिकाएँ :**

- विस्तृत उत्तर देने के लिए खुले प्रश्न तैयार करें।
- उदाहरण:

- "क्या आप बता सकते हैं कि आपके क्षेत्र में राजनीतिक अभियान जाति-आधारित मुद्दों को किस प्रकार संबोधित करते हैं?"

4. कार्यप्रणाली का दृश्य प्रतिनिधित्व

फ्लोचार्ट, आरेख या तालिकाओं जैसे दृश्य साधन जटिल प्रक्रियाओं को स्पष्ट कर सकते हैं।

- डेटा संग्रह के लिए उदाहरण फ्लोचार्ट :

लक्षित जनसंख्या की पहचान करें → नमूनाकरण ढांचा विकसित करें → सर्वेक्षण संचालित करें → साक्षात्कार आयोजित करें → डेटा का विश्लेषण करें

- विधि सारांश के लिए उदाहरण तालिका :

प्रश्न का अनुसंधान	डेटा संग्रह विधि	नमूने का आकार	डेटा विश्लेषण तकनीक
मतदान के निर्धारक क्या हैं?	सर्वेक्षण	500 मतदाता	प्रतिगमन विश्लेषण
जाति मतदान को किस प्रकार प्रभावित करती है?	साक्षात्कार	50 नेताओं	विषयगत कोडिंग

5. विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करना

विश्वसनीय अनुसंधान के लिए विश्वसनीयता और वैधता महत्वपूर्ण हैं।

- विश्वसनीयता :

- माप की स्थिरता.
- उदाहरण: "विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए सर्वेक्षण उपकरण का परीक्षण 20 प्रतिभागियों के साथ किया गया।"

- वैधता :

- उपकरण किस सीमा तक उस चीज़ को मापता है जिसे मापने के लिए उसका इरादा है।
- उदाहरण: "विषय-वस्तु की वैधता सुनिश्चित करने के लिए राजनीति विज्ञान के विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा प्रश्नों की समीक्षा की गई।"

6. चुनौतियाँ और शमन

संभावित चुनौतियों की पहचान करें और समाधान प्रस्तावित करें।

- **चुनौती** : सर्वेक्षण प्रतिक्रिया दर कम.
 - **समाधान** : प्रतिभागियों को प्रोत्साहन प्रदान करें या उनसे संपर्क बनाए रखें।
 - **चुनौती** : ग्रामीण परिवेश में भाषा संबंधी बाधाएं।
 - **समाधान** : सर्वेक्षण उपकरणों का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद करें और क्षेत्रीय कर्मचारियों को प्रशिक्षित करें।
-

7. कार्यप्रणाली लिखने के लिए व्यावहारिक सुझाव

1. **विस्तृत एवं विशिष्ट रहें :**
 - डेटा एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने के लिए उठाए गए कदमों को स्पष्ट रूप से समझाएं।
 2. **स्पष्ट भाषा का प्रयोग करें :**
 - शब्दजाल से बचें और सुनिश्चित करें कि तकनीकी शब्दों को स्पष्ट किया गया हो।
 3. **विकल्पों का औचित्य सिद्ध करें :**
 - बताएं कि विशिष्ट तरीकों को क्यों चुना गया और वे आपके उद्देश्यों के साथ किस प्रकार संरेखित हैं।
-

नमूना कार्यप्रणाली विवरण

"यह अध्ययन ग्रामीण भारत में मतदान के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक निर्धारकों का पता लगाने के लिए मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण अपनाता है। 500 यादृच्छिक रूप से चुने गए मतदाताओं पर एक सर्वेक्षण किया गया, जबकि जाति-आधारित प्रभावों को समझने के लिए स्थानीय नेताओं के साथ 50 अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए। मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण प्रतिगमन मॉडल का उपयोग करके किया गया, जबकि गुणात्मक डेटा को विषयगत रूप से कोडित किया गया। शोध की अखंडता सुनिश्चित करने के लिए सूचित सहमति और डेटा गुमनामीकरण सहित नैतिक विचारों का कड़ाई से पालन किया गया।"

शोध डिजाइन, डेटा संग्रहण विधियों और विश्लेषण तकनीकों का विवरण देकर, कार्यप्रणाली अनुभाग आपके अध्ययन की विश्वसनीयता और दोहराव को स्थापित करता है।

खंड 7: परिणाम और विश्लेषण

सार्थक अंतर्दृष्टि के लिए डेटा प्रस्तुत करना और व्याख्या करना

परिणाम और विश्लेषण अनुभाग वह है जहाँ आप अपने निष्कर्षों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करते हैं और उनके महत्व की व्याख्या करते हैं। यह अनुभाग शोध के दौरान एकत्रित अपरिष्कृत आँकड़ों को आपके शोध-प्रबंध के व्यापक विवरण से जोड़ता है। एक सुव्यवस्थित परिणाम और विश्लेषण अध्याय न केवल आपके निष्कर्षों को प्रदर्शित करता है, बल्कि आपके शोध प्रश्नों और परिकल्पनाओं के लिए उनकी प्रासंगिकता को भी दर्शाता है।

1. परिणाम और विश्लेषण अनुभाग का उद्देश्य

1. निष्कर्ष स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करें :
 - डेटा को तार्किक और संगठित तरीके से प्रदर्शित करें।
 - स्पष्टता के लिए तालिकाओं, ग्राफ़ और चार्ट का उपयोग करें।
 2. निष्कर्षों की व्याख्या करें :
 - निष्कर्षों को अपने शोध उद्देश्यों और परिकल्पनाओं से जोड़ें।
 3. रुझान और पैटर्न को हाइलाइट करें :
 - महत्वपूर्ण परिणामों और उनके निहितार्थों पर चर्चा करें।
 4. शोध प्रश्नों का उत्तर दें :
 - डेटा के आधार पर सीधे उत्तर प्रदान करें।
-

2. परिणाम और विश्लेषण अनुभाग की संरचना

पठनीयता और सुसंगतता के लिए एक सुव्यवस्थित संरचना महत्वपूर्ण है।

क. परिचय

- चर्चा किए जाने वाले परिणामों के अवलोकन से शुरुआत करें।
- बताएं कि डेटा कैसे प्रस्तुत किया जाएगा (उदाहरण के लिए, विषयगत या शोध प्रश्न द्वारा)।

उदाहरण : "यह अध्याय ग्रामीण जिलों में किए गए सर्वेक्षण और साक्षात्कारों के निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। परिणाम तीन प्रमुख विषयों के अंतर्गत व्यवस्थित हैं: सामाजिक-आर्थिक कारक, जातिगत प्रभाव और राजनीतिक अभियानों का प्रभाव।"

बी. परिणामों की प्रस्तुति

1. मात्रात्मक डेटा :

- सांख्यिकीय निष्कर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए तालिकाओं, ग्राफ़ या चार्ट का उपयोग करें।
- उदाहरण:
 - "तालिका 1 आय स्तर और मतदाता मतदान के बीच सहसंबंध को दर्शाती है, जो 0.75 के पियर्सन गुणांक के साथ सकारात्मक संबंध दर्शाता है।"
- महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों या विसंगतियों का वर्णन करें।
 - "मध्यम आय वर्ग में मतदान प्रतिशत सबसे अधिक था, जैसा कि चित्र 2 में दिखाया गया है।"

2. गुणात्मक डेटा :

- साक्षात्कारों या अवलोकनों में पहचाने गए विषयों या पैटर्न को प्रस्तुत करें।
- उदाहरण:
 - साक्षात्कारकर्ताओं ने मतदान की प्राथमिकताओं को आकार देने में जाति-आधारित अपील की भूमिका पर ज़ोर दिया। एक उत्तरदाता ने कहा, 'जाति के नेता अक्सर हमारी पसंद तय करते हैं, क्योंकि उनका समुदाय पर काफ़ी प्रभाव होता है।'

c. डेटा विश्लेषण

यह खंड परिणामों की व्याख्या पर गहराई से विचार करता है, तथा उन्हें आपके शोध प्रश्नों और परिकल्पनाओं से जोड़ता है।

1. मात्रात्मक विश्लेषण :

- आंकड़ों की व्याख्या करने के लिए सांख्यिकीय उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करें।

- उदाहरण:

- "प्रतिगमन विश्लेषण से पता चला है कि आय स्तर ($\beta = 0.45, p < 0.01$) मतदाता मतदान का महत्वपूर्ण रूप से अनुमान लगाता है। यह परिकल्पना 1 का समर्थन करता है, जिसमें आय और मतदान के बीच एक सकारात्मक संबंध स्थापित किया गया था।"

2. गुणात्मक विश्लेषण :

- प्रतिक्रियाओं की व्याख्या करने के लिए विषयगत या कथात्मक विश्लेषण का उपयोग करें।

- उदाहरण:

- "साक्षात्कारों से तीन प्रमुख विषय उभर कर सामने आए: जातिगत निष्ठा का महत्व, स्थानीय नेताओं का प्रभाव, और मतदाता निर्णय लेने में आर्थिक प्रोत्साहन की भूमिका।"

3. मिश्रित-विधि एकीकरण :

- समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक अंतर्दृष्टि को संयोजित करें।

- उदाहरण:

- "जबकि सर्वेक्षण के आंकड़ों में आय को मतदाता मतदान का एक प्रमुख निर्धारक बताया गया है, साक्षात्कारों से पता चला है कि आर्थिक कारक अक्सर जातिगत निष्ठाओं और सामुदायिक गतिशीलता द्वारा मध्यस्थ होते हैं।"

D. प्रमुख निष्कर्षों पर प्रकाश डालना

अपने शोध प्रश्नों के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण परिणामों का सारांश प्रस्तुत करें।

उदाहरण :

- शोध प्रश्न: "ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के सामाजिक-आर्थिक निर्धारक क्या हैं?"
 - निष्कर्ष: "आय और शिक्षा का स्तर मतदान के साथ सकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित था, जिसमें मध्यम आय वाले मतदाताओं ने सबसे अधिक भागीदारी दर दिखाई।"
- शोध प्रश्न: "जाति मतदान व्यवहार को कैसे प्रभावित करती है?"

- निष्कर्ष: "जाति-आधारित अपील को मतदान निर्णयों में एक प्रमुख कारक के रूप में बताया गया, जिसमें 65% उत्तरदाताओं ने संकेत दिया कि जातिगत निष्ठा ने उनकी पसंद को प्रभावित किया।"

3. परिणामों का दृश्य प्रतिनिधित्व

प्रभावी दृश्य सहायक सामग्री समझ और संलग्नता को बढ़ाती है।

- **टेबल्स :**

- विस्तृत संख्यात्मक डेटा के लिए उपयोग करें.
- उदाहरण:

आय समूह	मतदान का प्रमाण (%)
कम आय	55%
मध्यम आय	75%
उच्च आय	68%

- **ग्राफ़/चार्ट :**

- समूहों की तुलना के लिए बार चार्ट.
- समय के साथ रुझानों के लिए रेखा ग्राफ।
- उदाहरण: विभिन्न आय समूहों में मतदाता मतदान के रुझान को दर्शाने वाला एक रेखा ग्राफ।

- **विषयगत आरेख :**

- विषयों को चित्रित करने के लिए गुणात्मक डेटा का उपयोग करें।

4. अप्रत्याशित परिणामों को संबोधित करना

सभी परिणाम आपकी परिकल्पनाओं के अनुरूप नहीं हो सकते, और यह बिल्कुल ठीक है।

- किसी भी अप्रत्याशित या विरोधाभासी निष्कर्ष पर चर्चा करें।

- उदाहरण:

- "परिकल्पना 2 के विपरीत, उच्च आय वाले मतदाताओं की मतदान दर मध्यम आय वाले मतदाताओं की तुलना में कम थी। यह शहरी प्रवास या स्थानीय राजनीति में अरुचि के कारण हो सकता है।"

5. परिणामों को मौजूदा साहित्य से जोड़ना

अपने शोध को व्यापक शैक्षणिक संदर्भ में स्थापित करने के लिए अपने निष्कर्षों की तुलना पिछले अध्ययनों से करें।

उदाहरण :

- ये निष्कर्ष सामाजिक-आर्थिक निर्धारकों पर गुप्ता (2015) के अध्ययन के अनुरूप हैं, लेकिन सिंह (2018) के इस दावे को चुनौती देते हैं कि ग्रामीण राजनीति में जाति का प्रभाव कम हो रहा है।

6. डेटा की सीमाएँ

अपने डेटा या विश्लेषण में किसी भी सीमा को स्वीकार करें।

- उदाहरण:

- सर्वेक्षण का नमूना दो जिलों तक सीमित था, जो ग्रामीण भारत की विविधता का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है।
- व्यवहार पर स्वयं-रिपोर्ट किए गए आंकड़े सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह के अधीन हो सकते हैं।"

7. निष्कर्षों के व्यावहारिक अनुप्रयोग

चर्चा करें कि आपके परिणामों का वास्तविक दुनिया के संदर्भों में कैसे उपयोग किया जा सकता है।

- उदाहरण:

- "ये जानकारीयां लक्षित मतदाता जागरूकता अभियानों को सूचित कर सकती हैं, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां सामाजिक-आर्थिक बाधाएं भागीदारी को सीमित करती हैं।"

परिणामों और विश्लेषण के लिए नमूना पाठ

"इस अध्ययन से पता चला है कि ग्रामीण भारत में आय और जाति, मतदान के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। मध्यम आय वाले मतदाताओं ने सबसे ज़्यादा मतदान दर (75%) प्रदर्शित की, जबकि गुणात्मक साक्षात्कारों ने जाति-आधारित अपीलों के व्यापक प्रभाव को उजागर किया। प्रतिगमन विश्लेषण ने आय और मतदान के बीच एक मज़बूत सकारात्मक संबंध की पुष्टि की ($\beta = 0.45$, $p < 0.01$)। ये निष्कर्ष लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ाने के लिए आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करने के महत्व को रेखांकित करते हैं।"

खंड 8: चर्चा

परिणामों की व्याख्या और निहितार्थों की खोज

चर्चा अनुभाग आपके निष्कर्षों के व्यापक अर्थ और निहितार्थों पर गहराई से विचार करता है। यह आपके परिणामों को शोध प्रश्नों, मौजूदा साहित्य और सैद्धांतिक ढाँचों से जोड़ता है। यह अनुभाग अध्ययन के योगदानों पर प्रकाश डालता है, सीमाओं पर विचार करता है और भविष्य की शोध दिशाएँ सुझाता है।

1. चर्चा अनुभाग का उद्देश्य

चर्चा में शोध उद्देश्यों के आलोक में परिणामों की व्याख्या की गई है और उनके महत्व पर ज़ोर दिया गया है। प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं:

1. निष्कर्षों की व्याख्या :

- परिणामों की गहन व्याख्या प्रदान करें।

2. साहित्य से जोड़ना :

- मौजूदा अध्ययनों के साथ निष्कर्षों की तुलना और विरोधाभास करें।

3. निहितार्थों की खोज :

- अध्ययन के सैद्धांतिक, व्यावहारिक और नीतिगत निहितार्थों पर चर्चा करें।

4. सीमाओं की पहचान करना :

- अध्ययन की बाधाओं को स्वीकार करें और यह भी बताएं कि वे व्याख्याओं को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं।

5. भावी अनुसंधान का सुझाव :

- आगे अन्वेषण के लिए क्षेत्रों का प्रस्ताव करें।
-

2. चर्चा अनुभाग की संरचना

क. परिचय

- मुख्य निष्कर्षों के संक्षिप्त सारांश से शुरुआत करें।
- शोध प्रश्नों या परिकल्पनाओं को पुनः प्रस्तुत करें।

उदाहरण : "इस अध्ययन में ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक निर्धारकों की जाँच की गई। परिणामों ने आय और जाति को महत्वपूर्ण कारकों के रूप में उजागर किया, जिसमें राजनीतिक अभियानों ने एक मध्यस्थ भूमिका निभाई। यह खंड मौजूदा साहित्य के संदर्भ में इन निष्कर्षों की व्याख्या करता है और उनके व्यापक निहितार्थों पर चर्चा करता है।"

बी. परिणामों की व्याख्या

चर्चा करें कि आपके निष्कर्षों का क्या अर्थ है और वे क्यों महत्वपूर्ण हैं।

1. निष्कर्षों को उद्देश्यों के साथ संरेखित करें :

- प्रत्येक शोध प्रश्न या परिकल्पना पर ध्यान दें।
- उदाहरण:
 - शोध प्रश्न: "मतदाता मतदान के सामाजिक-आर्थिक निर्धारक क्या हैं?"
 - व्याख्या: "आय और मतदाता मतदान के बीच सकारात्मक संबंध राजनीतिक भागीदारी में आर्थिक सुरक्षा की भूमिका को रेखांकित करता है।"

2. संदर्भ प्रदान करें :

- निष्कर्षों को व्यापक सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में रखें।
- उदाहरण:
 - "जातिगत निष्ठा का प्रभाव ग्रामीण भारत में गहराई से व्याप्त सामाजिक पदानुक्रम को प्रतिबिंबित करता है, जो चुनावी व्यवहार को आकार देता रहता है।"

3. अप्रत्याशित परिणामों पर चर्चा करें :

- विसंगतियों या विरोधाभासों को स्वीकार करें और उन्हें तर्कसंगत बनाएं।
- उदाहरण:
 - "उम्मीदों के विपरीत, उच्च आय वाले मतदाताओं ने कम मतदान दर दिखाई। इसका कारण शहरी प्रवास या स्थानीय शासन पर कम निर्भरता हो सकती है।"

c. निष्कर्षों को मौजूदा साहित्य से जोड़ना

1. संगतताओं पर प्रकाश डालें :

- पिछले अध्ययनों के साथ संरेखण प्रदर्शित करें।
- उदाहरण:
 - *ये निष्कर्ष गुप्ता के (2015) निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं कि आय का स्तर ग्रामीण क्षेत्रों में मतदाता भागीदारी को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।*

2. विरोधाभासों को संबोधित करें :

- मौजूदा शोध के साथ विसंगतियों को स्पष्ट करें।
- उदाहरण:
 - *"जबकि सिंह (2018) ने तर्क दिया कि जातिगत प्रभाव कम हो रहे हैं, यह अध्ययन उनकी निरंतर प्रासंगिकता को प्रदर्शित करता है, विशेष रूप से स्थानीय चुनावों में।"*

3. अग्रिम सैद्धांतिक योगदान :

- दिखाएँ कि आपका अध्ययन किस प्रकार मौजूदा सिद्धांतों को विस्तारित करता है या उन्हें चुनौती देता है।
- उदाहरण:
 - *"यह शोध तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत को व्यवहार सिद्धांत के साथ एकीकृत करता है, यह दर्शाता है कि आर्थिक प्रोत्साहन और सांस्कृतिक मानदंड मतदाता व्यवहार को आकार देने के लिए परस्पर क्रिया करते हैं।"*

d. निष्कर्षों के निहितार्थ

1. सैद्धांतिक निहितार्थ :

- इस बात पर प्रकाश डालें कि अध्ययन अकादमिक समझ में किस प्रकार योगदान देता है।
- उदाहरण:

- सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों को एक सुसंगत ढांचे में एकीकृत करके मतदाता व्यवहार पर चर्चा को आगे बढ़ाता है।"

2. व्यवहारिक निहितार्थ :

- चर्चा करें कि निष्कर्ष किस प्रकार नीति या व्यवहार को सूचित कर सकते हैं।
- उदाहरण:
 - नीति निर्माताओं को मतदाता जागरूकता अभियानों को प्राथमिकता देनी चाहिए जो भागीदारी में आने वाली आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करें।

3. नीतिगत सिफारिशें :

- अपने निष्कर्षों के आधार पर कार्रवाई योग्य कदम सुझाएँ।
- उदाहरण:
 - "राजनीतिक अभियानों में समावेशिता को बढ़ावा देने और धुवीकरण को कम करने के लिए जाति-तटस्थ संदेश शामिल होना चाहिए।"

ई. अध्ययन की सीमाएँ

हर अध्ययन की अपनी सीमाएँ होती हैं। उन्हें स्वीकार करने से आपके शोध की विश्वसनीयता मज़बूत होती है।

1. पद्धतिगत सीमाएँ :

- उदाहरण:
 - "नमूना दो जिलों तक सीमित था, जो ग्रामीण भारत की पूरी विविधता को नहीं दर्शा सकता।"

2. डेटा बाधाएँ :

- उदाहरण:
 - व्यवहार पर स्वयं-रिपोर्ट किए गए आंकड़े सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह से प्रभावित हो सकते हैं।"

3. सैद्धांतिक दायरा :

- उदाहरण:

- "यह अध्ययन ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्रों पर केंद्रित था; भविष्य के शोध में शहरी-ग्रामीण तुलनाओं का पता लगाया जाना चाहिए।"

एफ. भविष्य के अनुसंधान निर्देश

उन क्षेत्रों का प्रस्ताव करें जहां आगे अन्वेषण की आवश्यकता है।

1. भौगोलिक दायरा विस्तृत करें :

○ उदाहरण:

- "भविष्य के अध्ययनों में विभिन्न परिस्थितियों में सामाजिक-आर्थिक प्रभावों की तुलना करने के लिए शहरी क्षेत्रों को भी शामिल किया जा सकता है।"

2. अनुदैर्घ्य विधियों का उपयोग करें :

○ उदाहरण:

- "अनुदैर्घ्य अनुसंधान कई चुनाव चक्रों में मतदाता व्यवहार में परिवर्तन को ट्रैक कर सकता है।"

3. नए चरों का अन्वेषण करें :

○ उदाहरण:

- डिजिटल साक्षरता और सोशल मीडिया प्रभाव जैसे अतिरिक्त कारकों की भी जांच की जानी चाहिए।

3. चर्चा लिखने के लिए व्यावहारिक सुझाव

1. विश्लेषणात्मक बनें, वर्णनात्मक नहीं :

○ परिणामों को दोहराने के बजाय डेटा की व्याख्या पर ध्यान केंद्रित करें।

2. तार्किक प्रवाह बनाए रखें :

○ व्याख्याओं, निहितार्थों और सीमाओं के बीच सहज संक्रमण सुनिश्चित करें।

3. शक्तियों और कमजोरियों को संतुलित करें :

○ योगदानों के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर बताए बिना उन्हें उजागर करें।

चर्चा अनुभाग के लिए नमूना पाठ

यह अध्ययन ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान को आकार देने में सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के बीच परस्पर क्रिया को रेखांकित करता है। आय और मतदान के बीच सकारात्मक सहसंबंध तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत के अनुरूप है, जो दर्शाता है कि आर्थिक सुरक्षा राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देती है। हालाँकि, जाति-आधारित अपीलों का प्रभाव सांस्कृतिक मानदंडों की स्थायी प्रासंगिकता को दर्शाता है, जो जातिगत राजनीति में गिरावट की धारणाओं को चुनौती देता है। ये निष्कर्ष समावेशी मतदाता संपर्क कार्यक्रमों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं जो आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करते हैं। हालाँकि यह अध्ययन मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, लेकिन इसका भौगोलिक दायरा और स्व-रिपोर्ट किए गए आँकड़ों पर निर्भरता सामान्यीकरण को बढ़ाने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

खंड 9: निष्कर्ष

प्रमुख निष्कर्षों का संश्लेषण और योगदानों पर चिंतन

निष्कर्ष आपके शोध प्रबंध का अंतिम अध्याय है, जहाँ आप अपने निष्कर्षों को समेकित करते हैं, उनके महत्व को रेखांकित करते हैं, और भविष्य के शोध के लिए मार्ग सुझाते हैं। यह भाग पाठक को आपके शोध की उपलब्धियों और उसके व्यापक निहितार्थों की स्पष्ट समझ प्रदान करता है।

1. निष्कर्ष अनुभाग का उद्देश्य

निष्कर्ष का उद्देश्य है:

1. **मुख्य निष्कर्षों का सारांश :**
 - मुख्य परिणामों का संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करें।
 2. **अनुसंधान योगदान को दोहराएँ :**
 - इस बात पर प्रकाश डालें कि आपका अध्ययन किस प्रकार क्षेत्र में ज्ञान को बढ़ाता है।
 3. **व्यावहारिक और सैद्धांतिक निहितार्थों पर विचार करें :**
 - अपने निष्कर्षों के व्यापक प्रभाव पर चर्चा करें।
 4. **भावी अनुसंधान दिशाएँ प्रस्तावित करें :**
 - आगे की जांच के लिए क्षेत्रों का सुझाव दें।
 5. **अंतिम विचार प्रस्तुत करें :**
 - शोध यात्रा पर एक विचारशील समापन वक्तव्य प्रदान करें।
-

2. निष्कर्ष की संरचना

A. अनुसंधान उद्देश्यों और प्रश्नों का पुनर्कथन

अपने अध्ययन के लक्ष्यों पर पुनः विचार करके शुरुआत करें।

- **उदाहरण :**

- "इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक निर्धारकों की जाँच करना था। इसने दो प्रमुख प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया: (1) मतदाता व्यवहार को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक कारक क्या हैं? (2) जातिगत गतिशीलता और राजनीतिक अभियान चुनावी भागीदारी को कैसे आकार देते हैं?"

बी. प्रमुख निष्कर्षों का सारांश

अपने परिणामों का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करें।

1. निष्कर्षों को शोध प्रश्नों के साथ संरेखित करें :

- उदाहरण:

- विश्लेषण से पता चला कि आय और शिक्षा का स्तर मतदान प्रतिशत को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, जिसमें मध्यम आय वर्ग के मतदाताओं की भागीदारी दर सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त, जाति-आधारित अपील एक प्रमुख कारक के रूप में उभरी, जिसने सामाजिक-आर्थिक कारकों के प्रभाव को कम किया।

2. अप्रत्याशित परिणामों पर प्रकाश डालें :

- उदाहरण:

- "अपेक्षाओं के विपरीत, उच्च आय वाले मतदाताओं ने कम मतदान दर दिखाई, यह एक ऐसा रुझान है जिसकी आगे जांच की आवश्यकता है।"

c. क्षेत्र में योगदान

इस बात पर जोर दें कि आपका शोध राजनीति विज्ञान में ज्ञान को कैसे आगे बढ़ाता है।

1. सैद्धांतिक योगदान :

- उदाहरण:

- यह अध्ययन सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों को एकीकृत करता है, तथा ग्रामीण भारत में मतदाता व्यवहार को समझने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

2. व्यावहारिक योगदान :

○ उदाहरण:

- "निष्कर्ष नीति निर्माताओं के लिए कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, जैसे जाति-तटस्थ राजनीतिक अभियान तैयार करना और मतदान में आर्थिक बाधाओं को दूर करना।"

D. निष्कर्षों के निहितार्थ

अपने शोध के व्यापक महत्व पर चर्चा करें।

1. सिद्धांत के लिए :

○ उदाहरण:

- व्यवहार सिद्धांत के बीच परस्पर क्रिया को प्रदर्शित करके, यह अध्ययन मतदाता निर्णय निर्माण प्रक्रियाओं की सैद्धांतिक समझ को आगे बढ़ाता है।"

2. पॉलिसी के लिए :

○ उदाहरण:

- "लक्षित हस्तक्षेप सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को दूर करके और जाति-आधारित ध्रुवीकरण को कम करके मतदाता भागीदारी को बढ़ा सकते हैं।"

ई. अध्ययन की सीमाएँ

उन बाधाओं को स्वीकार करें जिन्होंने आपके शोध को प्रभावित किया हो।

• उदाहरण:

- "हालांकि यह अध्ययन मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, लेकिन इसका दायरा ग्रामीण भारत के दो जिलों तक सीमित था, जो देश के मतदाताओं की विविधता का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है।"

एफ. भविष्य के अनुसंधान निर्देश

उन क्षेत्रों का प्रस्ताव करें जहां आगे अन्वेषण की आवश्यकता है।

1. भौगोलिक दायरा विस्तृत करें :

○ उदाहरण:

- "भविष्य के शोध में शहरी और अर्ध-शहरी मतदाताओं के व्यवहार की जांच की जा सकती है ताकि विभिन्न संदर्भों में समानताएं और अंतरों की पहचान की जा सके।"

2. नए चरों की जांच करें :

○ उदाहरण:

- "आगे के अध्ययनों में मतदाताओं की धारणाओं और निर्णयों को आकार देने में डिजिटल मीडिया की भूमिका का पता लगाया जाना चाहिए।"

3. अनुदैर्घ्य दृष्टिकोण अपनाएं :

○ उदाहरण:

- "दीर्घकालिक अध्ययन लगातार चुनावों में मतदाता व्यवहार में परिवर्तन को ट्रैक कर सकते हैं।"

जी. अंतिम प्रतिबिंब

एक विचारशील कथन के साथ समापन करें जो आपकी शोध यात्रा को संक्षेप में प्रस्तुत करे।

• उदाहरण:

- व्यवहार को आकार देने वाली जटिल गतिशीलता का अन्वेषण रहा है। यह जहाँ स्थायी चुनौतियों को उजागर करता है, वहीं समावेशी और समतामूलक लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए सूचित हस्तक्षेपों की क्षमता को भी रेखांकित करता है। जैसे-जैसे हम बदलते राजनीतिक परिदृश्य का अध्ययन और अनुकूलन जारी रखते हैं, यहाँ प्राप्त अंतर्दृष्टि भविष्य के शोध और नीति निर्माण के लिए आधार का काम कर सकती है।"

3. निष्कर्ष लिखने के लिए व्यावहारिक सुझाव

1. संक्षिप्त किन्तु व्यापक रहें :

- नई जानकारी या विस्तृत विवरण देने से बचें।

2. अनुसंधान लक्ष्यों पर केंद्रित रहें :

- चर्चा को अपने उद्देश्यों और प्रश्नों के अनुरूप रखें।

3. एक मजबूत नोट पर समाप्त :

- स्थायी प्रभाव छोड़ने के लिए चिंतनशील या भविष्यदर्शी भाषा का प्रयोग करें।

निष्कर्ष के लिए नमूना पाठ

"इस अध्ययन ने ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक निर्धारकों पर प्रकाश डाला है, जिसमें आय, शिक्षा और जातिगत गतिशीलता प्रमुख कारक बनकर उभरे हैं। तर्कसंगत विकल्प और व्यवहार सिद्धांतों को एकीकृत करके, यह शोध विकासशील लोकतंत्रों में मतदाता व्यवहार को समझने के लिए एक सूक्ष्म रूपरेखा प्रदान करता है। अपनी सीमाओं के बावजूद, यह अध्ययन नीति निर्माताओं के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और चुनावी भागीदारी के आगे के अन्वेषण के लिए मंच तैयार करता है। जैसे जैसे ग्रामीण भारत विकसित होता जा रहा है, लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत करने के लिए अपने मतदाताओं को समझना महत्वपूर्ण बना रहेगा।"

निष्कर्ष आपके शोध के मूल्य को पुष्ट करने का आपका अंतिम अवसर है। अपने निष्कर्षों का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करके, उनके महत्व पर ज़ोर देकर और भविष्य की ओर देखते हुए, आप पाठकों को इस क्षेत्र में अपने योगदान की स्पष्ट समझ प्रदान करते हैं।

खंड 10: संदर्भ

एक विश्वसनीय और विश्वसनीय ग्रंथसूची का निर्माण

संदर्भ अनुभाग आपके शोध प्रबंध का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो आपके शोध की गहराई और व्यापकता को दर्शाता है। इसमें आपके शोध में उद्धृत सभी स्रोत शामिल होते हैं, जिससे आपके अध्ययन को प्रभावित करने वाले बौद्धिक योगदानों का उचित आभार सुनिश्चित होता है।

1. संदर्भ अनुभाग का उद्देश्य

संदर्भ अनुभाग का उद्देश्य है:

1. **सूत्रों को स्वीकार करें :**
 - जिन लेखकों और शोधकर्ताओं के कार्यों का आपने उल्लेख किया है, उन्हें श्रेय दें।
 2. **विश्वसनीयता बढ़ाएँ :**
 - प्रामाणिक स्रोतों को शामिल करके अपने शोध की कठोरता दिखाएं।
 3. **सत्यापन की सुविधा :**
 - पाठकों को आगे पढ़ने या सत्यापन के लिए अपने स्रोतों का पता लगाने में सक्षम बनाएं।
-

2. सामान्य संदर्भ शैलियाँ

विभिन्न स्रोतों का हवाला देने के लिए प्रत्येक संदर्भ शैली के अपने विशिष्ट नियम होते हैं। अपने शोध-प्रबंध में चुनी गई शैली का लगातार पालन करना महत्वपूर्ण है।

ए. एपीए शैली (7वां संस्करण)

सामाजिक विज्ञान में व्यापक रूप से प्रयुक्त, APA विभिन्न स्रोतों का हवाला देने के लिए एक स्पष्ट प्रारूप प्रदान करता है।

- **उदाहरण :**

- **पुस्तक** :
स्मिथ, जे. (2020). *ग्रामीण भारत में लोकतंत्र*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- **जर्नल लेख** :
गुप्ता, आर., और सिंह, पी. (2021)। भारतीय गाँवों में मतदान व्यवहार । *जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल स्टडीज़*, 15 (2), 45–67। <https://doi.org/10.1234/jps.v15i2.5678>
- **वेबसाइट** :
भारत निर्वाचन आयोग। (2023, 15 अप्रैल)। *मतदाता मतदान आँकड़े 2023*। <https://eci.gov.in/statistics>

बी. एमएलए शैली (9वां संस्करण)

मानविकी और उदार कलाओं में सामान्यतः प्रयुक्त, एम.एल.ए. उद्धरण में स्पष्टता और लचीलेपन को प्राथमिकता देता है।

• उदाहरण :

- **पुस्तक** :
स्मिथ, जॉन. *ग्रामीण भारत में लोकतंत्र*. ऑक्सफ़ोर्ड यूपी, 2020.
- **जर्नल लेख** :
गुप्ता, रमेश और पूजा सिंह। " भारतीय गाँवों में मतदान व्यवहार ।" *जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल स्टडीज़*, खंड 15, अंक 2, 2021, पृष्ठ 45-67।
- **वेबसाइट** :
भारत निर्वाचन आयोग। *मतदाता मतदान आँकड़े 2023*। भारत निर्वाचन आयोग, 15 अप्रैल 2023, <https://eci.gov.in/statistics>।

सी. शिकागो शैली (17वां संस्करण)

इतिहास और कुछ सामाजिक विज्ञानों में प्रचलित, शिकागो शैली दो संदर्भ प्रारूप प्रदान करती है: नोट्स और ग्रंथसूची या लेखक-तिथि। यहाँ, लेखक-तिथि प्रणाली प्रस्तुत की गई है।

• उदाहरण :

- **पुस्तक** :
स्मिथ, जॉन. *ग्रामीण भारत में लोकतंत्र*. ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020.

- **जर्नल लेख :**
गुप्ता, रमेश और पूजा सिंह। " भारतीय गाँवों में मतदान व्यवहार ।" *जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल स्टडीज़* 15, अंक 2 (2021): 45-67।
<https://doi.org/10.1234/jps.v15i2.5678>।
- **वेबसाइट :**
भारत निर्वाचन आयोग। "मतदाता मतदान आँकड़े 2023।" अंतिम संशोधन 15 अप्रैल, 2023। <https://eci.gov.in/statistics>.

डी. हार्वर्ड शैली

सामाजिक विज्ञान, मानविकी, व्यवसाय और कुछ प्राकृतिक विज्ञान क्षेत्रों में शोध स्रोतों का हवाला देने के लिए आमतौर पर इसका इस्तेमाल किया जाता है। यह एक लेखक-तिथि प्रणाली है जो प्रस्तुत की जाती है।

• उदाहरण :

- **पुस्तक :**
रॉल्स, जे. (1999) *न्याय का एक सिद्धांत*. संशोधित संस्करण . कैम्ब्रिज, एमए: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- पाठ में उद्धरण: (रॉल्स, 1999)
- **जर्नल आर्टिकल :**
स्मिथ, जे. (2020) 'दक्षिण एशिया में नागरिक समाज और लोकतंत्र', *जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल स्टडीज़*, 15(2), पृ. 45-62.
- पाठ में उद्धरण: (स्मिथ, 2020)
- **वेबसाइट :**
स्मिथ, जे. (2022) *डिजिटल लोकतंत्र का उदय*। राजनीति विज्ञान ऑनलाइन। उपलब्ध: <https://www.politicalscienceonline.org/digital-democracy> (प्रवेश तिथि: 10 सितंबर 2025)।
- पाठ में उद्धरण: (स्मिथ, 2022)

3. संदर्भ संकलित करने के चरण

A. सभी स्रोतों की पहचान करें

अपने शोध-प्रबंध में उद्धृत प्रत्येक कार्य को शामिल करें, जैसे:

1. पुस्तकें
2. बहीखाता सामग्री
3. सरकारी रिपोर्ट
4. वेबसाइटें
5. सम्मेलन के कागजात
6. शोध प्रबंध या थीसिस

B. वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करें

प्रथम लेखक के अंतिम नाम के अनुसार संदर्भों को वर्णानुक्रम में सूचीबद्ध करें।

उदाहरण :

गुप्ता, रमेश और पूजा सिंह। "भारतीय गाँवों में मतदान व्यवहार ।" *जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल स्टडीज़*, खंड 15, अंक 2, 2021, पृष्ठ 45-67।

स्मिथ, जॉन. *ग्रामीण भारत में लोकतंत्र*. ऑक्सफ़ोर्ड यूपी, 2020.

C. उद्धरण उपकरण का उपयोग करें

ज़ोटेरो, मेंडली या एंडनोट जैसे उपकरण संदर्भ को स्वचालित करने में मदद कर सकते हैं।

4. संदर्भों के लिए प्रारूपण नियम

1. पंक्ति रिक्ति :
 - प्रविष्टियों के भीतर एकल अंतराल; प्रविष्टियों के बीच दोहरा अंतराल।
2. लटकदार लिखावट :
 - प्रत्येक संदर्भ में पहली पंक्ति के बाद सभी पंक्तियों को इंडेंट करें।
3. फ़ॉन्ट और आकार :

- मुख्य पाठ के फ्रॉन्ट और आकार से मिलान करें, आमतौर पर टाइम्स न्यू रोमन, 12 पॉइंट।

5. विशेष स्रोतों का संदर्भ देना

A. वेबसाइटें

1. एपीए शैली :

- प्रारूप: लेखक/संगठन. (दिनांक). पृष्ठ का शीर्षक. URL
- उदाहरण: भारत निर्वाचन आयोग (2023, 15 अप्रैल)। मतदाता मतदान आँकड़े 2023। <https://eci.gov.in/statistics>

2. एमएलए शैली :

- प्रारूप: लेखक/संगठन। पृष्ठ का शीर्षक। वेबसाइट का नाम, प्रकाशन तिथि, यूआरएल।
- उदाहरण: भारत निर्वाचन आयोग। मतदाता मतदान आँकड़े 2023। भारत निर्वाचन आयोग, 15 अप्रैल 2023, <https://eci.gov.in/statistics>।

3. शिकागो शैली :

- प्रारूप: लेखक/संगठन। "पृष्ठ का शीर्षक।" अंतिम संशोधन तिथि। URL।
- उदाहरण: भारत निर्वाचन आयोग। "मतदाता मतदान आँकड़े 2023।" अंतिम संशोधन 15 अप्रैल, 2023। <https://eci.gov.in/statistics>.

बी. सरकारी रिपोर्ट

1. एपीए शैली :

भारत सरकार (2020)। जनगणना 2020: जनसांख्यिकी अंतर्दृष्टि। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय।

2. एमएलए शैली :

भारत सरकार। जनगणना 2020: जनसांख्यिकी अंतर्दृष्टि। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, 2020।

3. शिकागो शैली :

भारत सरकार। *जनगणना 2020: जनसांख्यिकी अंतर्दृष्टि*। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, 2020।

c. अप्रकाशित कार्य

1. एपीए शैली :

सिंह, ए. (2022)। *मतदान पैटर्न पर जाति का प्रभाव*। अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

2. एमएलए शैली :

सिंह, अरुण। *मतदान के स्वरूप पर जाति का प्रभाव*। पीएच.डी. शोध प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2022।

3. शिकागो शैली :

सिंह, अरुण। *मतदान के स्वरूप पर जाति का प्रभाव*। पीएच.डी. शोध प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2022।

6. उदाहरण संदर्भ सूची

एपीए शैली:

पुस्तकें

स्मिथ, जे. (2020). *ग्रामीण भारत में लोकतंत्र*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

जर्नल लेख :

गुप्ता, आर., और सिंह, पी. (2021)। भारतीय गाँवों में मतदान व्यवहार । *जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज*, 15 (2), 45–67। <https://doi.org/10.1234/jps.v15i2.5678>

वेबसाइटें

भारत निर्वाचन आयोग। (2023, 15 अप्रैल)। *मतदाता मतदान आँकड़े 2023*। <https://eci.gov.in/statistics>

एमएलए शैली:

पुस्तकें

स्मिथ, जॉन. *ग्रामीण भारत में लोकतंत्र*. ऑक्सफ़ोर्ड यूपी, 2020.

जर्नल लेख :

गुप्ता, रमेश और पूजा सिंह। " भारतीय गाँवों में मतदान व्यवहार ।" *जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज़*, खंड 15, अंक 2, 2021, पृष्ठ 45-67।

वेबसाइटें :

भारत निर्वाचन आयोग। *मतदाता मतदान आँकड़े 2023*। भारत निर्वाचन आयोग, 15 अप्रैल 2023, <https://eci.gov.in/statistics>।

शिकागो शैली:**पुस्तकें :**

स्मिथ, जॉन. *ग्रामीण भारत में लोकतंत्र*. ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020.

जर्नल लेख :

गुप्ता, रमेश और पूजा सिंह। " भारतीय गाँवों में मतदान व्यवहार ।" *जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल स्टडीज़* 15, अंक 2 (2021): 45-67। <https://doi.org/10.1234/jps.v15i2.5678>।

वेबसाइटें :

भारत निर्वाचन आयोग। "मतदाता मतदान आँकड़े 2023।" अंतिम संशोधन 15 अप्रैल, 2023। <https://eci.gov.in/statistics>.

अपने संदर्भों को व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित करके और चुनी गई उद्धरण शैली का पालन करके, आप अपने शोध प्रबंध में शैक्षणिक कठोरता और व्यावसायिकता सुनिश्चित करते हैं।

खंड 11: परिशिष्ट

एक व्यापक थीसिस के लिए पूरक सामग्री सहित

परिशिष्ट **अनुभाग** वह जगह है जहाँ आपके शोध-प्रबंध के मुख्य पाठ का समर्थन करने वाली पूरक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। ये सामग्रियाँ, हालाँकि प्राथमिक तर्क के लिए आवश्यक नहीं हैं, पाठक की समझ को बढ़ाती हैं और आपके शोध के लिए अतिरिक्त संदर्भ या प्रमाण प्रदान करती हैं।

1. परिशिष्टों का उद्देश्य

परिशिष्ट निम्नलिखित कार्य करते हैं:

1. **अतिरिक्त डेटा प्रदान करें :**
 - इसमें कच्चा डेटा, विस्तृत गणना या विस्तृत तालिकाएं शामिल करें।
 2. **स्पष्टता बढ़ाएँ :**
 - मुख्य पाठ को दृश्य सामग्री या विस्तृत व्याख्याओं से पूरक करें।
 3. **पारदर्शिता सुनिश्चित करें :**
 - अपनी कार्यप्रणाली और निष्कर्षों को सत्यापन योग्य और पुनरुत्पादनीय बनाएं।
-

2. परिशिष्टों में क्या शामिल करें

शोध के आधार पर परिशिष्ट अलग-अलग हो सकते हैं। आमतौर पर शामिल किए जाने वाले परिशिष्ट इस प्रकार हैं:

ए. अनुसंधान उपकरण

1. सर्वेक्षण प्रश्नावली:
 - डेटा संग्रहण के लिए उपयोग की गई पूर्ण प्रश्नावली की एक प्रति शामिल करें।
 - उदाहरण:
 - “परिशिष्ट A: मतदाता व्यवहार पर सर्वेक्षण प्रश्नावली”

2. साक्षात्कार कार्यक्रम:

- साक्षात्कार के दौरान प्रयुक्त प्रश्नों या संकेतों की सूची प्रदान करें।

B. कच्चा डेटा

1. सांख्यिकीय डेटा:

- डेटासेट को उनके मूल स्वरूप में प्रस्तुत करें, जैसे मतदाता जनसांख्यिकी या प्रतिक्रिया आवृत्तियाँ।
- उदाहरण:
 - “परिशिष्ट बी: आय समूह के अनुसार मतदाता मतदान आँकड़े”

2. प्रतिलिपियाँ:

- साक्षात्कारों या फोकस समूह चर्चाओं के शब्दशः प्रतिलेख शामिल करें।

C. विस्तृत गणना

1. प्रतिगमन मॉडल:

- मात्रात्मक विश्लेषण में प्रयुक्त सम्पूर्ण गणितीय मॉडल उपलब्ध कराएं।

2. विषयगत कोडिंग फ्रेमवर्क:

- गुणात्मक डेटा विश्लेषण में प्रयुक्त कोडिंग संरचनाओं को साझा करें।

डी. दृश्य सामग्री

1. मानचित्र और चार्ट:

- अध्ययन किए गए क्षेत्रों को दर्शाने वाले क्षेत्रीय मानचित्र या निष्कर्षों का समर्थन करने वाले विस्तृत चार्ट शामिल करें।

2. तस्वीरें:

- प्रासंगिक चित्र जोड़ें, जैसे सामुदायिक कार्यक्रम या चुनाव अभियान (यदि नैतिक रूप से स्वीकार्य हो)।

ई. सहमति प्रपत्र

1. नैतिक दस्तावेज़ीकरण:

- प्रतिभागी सहमति प्रपत्र या संस्थागत समीक्षा बोर्ड (आईआरबी) अनुमोदन पत्र की प्रतियां शामिल करें।

- उदाहरण:

- “परिशिष्ट सी: सूचित सहमति प्रपत्र”

एफ. अतिरिक्त संदर्भ सामग्री

1. नीति दस्तावेज:

- थीसिस में संदर्भित सरकारी रिपोर्ट, चुनाव मैनुअल या नीतिगत संक्षिप्त विवरण शामिल करें।

2. परिभाषाएँ और संक्षिप्त शब्द:

- मुख्य पाठ में स्पष्ट न किए गए तकनीकी शब्दों या संक्षिप्त रूपों के लिए विस्तृत शब्दावली प्रदान करें।

3. परिशिष्टों का प्रारूपण

1. शीर्षक और लेबल :

- प्रत्येक परिशिष्ट को एक अद्वितीय शीर्षक और लेबल प्रदान करें।
- उदाहरण:
 - परिशिष्ट A: सर्वेक्षण प्रश्नावली
 - परिशिष्ट बी: प्रतिगमन विश्लेषण आउटपुट

2. प्लेसमेंट :

- परिशिष्ट को संदर्भ अनुभाग के बाद रखा गया है।

3. उपस्थिति का क्रम :

- परिशिष्टों को उसी क्रम में व्यवस्थित करें जिस क्रम में उनका उल्लेख थीसिस में किया गया है।

4. पृष्ठांकन :

- एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए मुख्य पाठ से ही क्रमांकन जारी रखें।

5. फ्रॉन्ट और शैली :

- मुख्य पाठ के समान ही फ्रॉन्ट और स्वरूपण शैली बनाए रखें।

4. परिशिष्ट प्रविष्टियों के उदाहरण

ए. सर्वेक्षण प्रश्नावली

परिशिष्ट A: सर्वेक्षण प्रश्नावली

यह सर्वेक्षण ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक निर्धारकों को समझने के लिए तैयार किया गया है।

खंड 1: जनसांख्यिकीय जानकारी

1. आयु:
2. लिंग:
3. आय स्तर:

खंड 2: राजनीतिक जागरूकता

4. क्या आप अपने निर्वाचन क्षेत्र के पार्टी उम्मीदवारों से अवगत हैं? (हाँ/नहीं)
5. आप कितनी बार राजनीतिक चर्चाओं में भाग लेते हैं? (कभी नहीं/शायद ही कभी/कभी-कभी/अक्सर)

धारा 3: मतदान व्यवहार

6. क्या आपने पिछले तीन चुनावों में मतदान किया है? (हाँ/नहीं)
7. आपके मतदान निर्णय को कौन से कारक प्रभावित करते हैं?
(जाति/धर्म/पार्टी विचारधारा/विकास के वादे)

बी. प्रतिगमन विश्लेषण

परिशिष्ट बी: प्रतिगमन विश्लेषण आउटपुट

मॉडल सारांश

- आर-स्केयर्ड: 0.78
- समायोजित आर-स्केयर्ड: 0.76

गुणांक:

- आय: $\beta = 0.45$, $p < 0.01$
- शिक्षा: $\beta = 0.38$, $p < 0.01$

- जाति प्रभाव: $\beta = 0.62, p < 0.05$

सी. सहमति पत्र

परिशिष्ट c: प्रतिभागी सहमति प्रपत्र

यह फॉर्म "ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के निर्धारक" शीर्षक वाले शोध अध्ययन में भाग लेने के लिए आपकी सहमति मांगता है।

1. भागीदारी स्वैच्छिक है, और आप किसी भी समय वापस ले सकते हैं।
 2. आपके उत्तर गोपनीय रहेंगे तथा अंतिम रिपोर्ट में उन्हें गुमनाम रखा जाएगा।
 3. आगे के प्रश्नों के लिए कृपया शोधकर्ता से संपर्क करें: [शोधकर्ता का नाम और संपर्क जानकारी]
- नीचे हस्ताक्षर करके, आप इस अध्ययन में भाग लेने के लिए सहमति देते हैं।

हस्ताक्षर: _____

तारीख: _____

5. परिशिष्ट बनाने के लिए सुझाव

1. चयनात्मक रहें :
 - केवल वही सामग्री शामिल करें जो अनुसंधान में मूल्य जोड़ती हो।
2. स्पष्टता सुनिश्चित करें :
 - प्रत्येक परिशिष्ट को स्पष्ट रूप से लेबल करें और उसकी विषय-वस्तु का संक्षिप्त परिचय दें।
3. नैतिक दिशानिर्देशों का पालन करें :
 - उचित सहमति के बिना संवेदनशील या गोपनीय जानकारी शामिल करने से बचें।

6. परिशिष्टों के लिए उदाहरण प्रारंभिक अनुच्छेद

"यहाँ दिए गए परिशिष्टों में पूरक सामग्री शामिल है जो इस थीसिस में प्रस्तुत विश्लेषण का समर्थन करती है। सर्वेक्षण प्रश्नावली से लेकर कच्चे डेटा और प्रतिगमन आउटपुट तक, ये सामग्रियाँ मुख्य पाठ में चर्चा किए गए निष्कर्षों के लिए पारदर्शिता और अतिरिक्त संदर्भ प्रदान करती हैं।"

7. परिशिष्टों के लिए चेकलिस्ट

अपने परिशिष्टों को अंतिम रूप देने से पहले, निम्नलिखित सुनिश्चित करें:

1. सभी सामग्रियों का संदर्भ मुख्य पाठ में दिया गया है।
2. प्रत्येक परिशिष्ट का एक स्पष्ट एवं वर्णनात्मक शीर्षक है।
3. प्रतिभागियों की गुमनामी जैसे नैतिक पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है।
4. प्रारूपण थीसिस के बाकी भाग के साथ संरेखित है।

परिशिष्ट अनुभाग को सोच-समझकर संकलित और व्यवस्थित करके, आप अपने शोध की गहराई और पारदर्शिता को बढ़ाते हैं, तथा पाठकों को आपके कार्य की बेहतर समझ प्रदान करते हैं।

खंड 12: नैतिक विचार

अनुसंधान प्रथाओं में अखंडता बनाए रखना

नैतिक विचार अनुभाग किसी भी शोध प्रबंध का एक अनिवार्य घटक है, जो शोधकर्ता की अध्ययन को ज़िम्मेदारी और नैतिक रूप से संचालित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह अनुभाग प्रतिभागियों की सुरक्षा, डेटा अखंडता सुनिश्चित करने और शैक्षणिक मानकों को बनाए रखने के लिए उठाए गए उपायों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

1. नैतिक विचारों का उद्देश्य

1. प्रतिभागियों की सुरक्षा करें :
 - अनुसंधान में शामिल लोगों के अधिकारों, गोपनीयता और कल्याण की रक्षा करना।
2. अनुसंधान अखंडता सुनिश्चित करें :
 - डेटा संग्रहण और विश्लेषण में पारदर्शिता और विश्वसनीयता बनाए रखें।
3. संस्थागत दिशानिर्देशों का पालन करें :
 - शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों द्वारा निर्धारित नैतिक मानकों का पालन करें।
4. विश्वसनीयता बढ़ाएँ :
 - नैतिक दृढ़ता का प्रदर्शन करके विश्वसनीयता स्थापित करें।

2. नैतिक विचारों के प्रमुख घटक

A. सूचित सहमति

1. परिभाषा :
 - प्रतिभागियों को अध्ययन के उद्देश्य, प्रक्रियाओं और संभावित जोखिमों को समझने के बाद स्वेच्छा से भाग लेने के लिए सहमत होना चाहिए।
2. सूचित सहमति सुनिश्चित करने के लिए कदम :
 - विस्तृत सहमति प्रपत्र उपलब्ध कराएं।

- ऐसी भाषा का प्रयोग करें जो स्पष्ट हो और प्रतिभागियों के लिए सुलभ हो।
- प्रतिभागियों को किसी भी समय प्रश्न पूछने और अपना नाम वापस लेने की अनुमति दें।

3. उदाहरण कथन :

- "सभी प्रतिभागियों ने एक सूचित सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए, जिसमें अध्ययन के उद्देश्यों, उनकी भागीदारी की स्वैच्छिक प्रकृति और किसी भी स्तर पर वापस लेने के उनके अधिकार का उल्लेख था।"

बी. गोपनीयता और गुमनामी

1. गोपनीयता :

- सुनिश्चित करें कि व्यक्तिगत डेटा सुरक्षित रूप से संग्रहीत है और केवल अधिकृत कर्मियों के लिए ही सुलभ है।
- उदाहरण: "अनधिकृत पहुंच को रोकने के लिए डेटा को एन्क्रिप्टेड डिजिटल प्रारूप में संग्रहीत किया गया था।"

2. गुमनामी :

- प्रतिभागियों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए पहचान संबंधी जानकारी हटा दें।
- उदाहरण: "प्रतिभागियों को उनकी प्रतिक्रियाओं को गुमनाम बनाने के लिए विशिष्ट कोड दिए गए थे।"

सी. नुकसान से बचाव

1. शारीरिक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा :

- प्रतिभागियों के लिए किसी भी संभावित असुविधा या जोखिम को न्यूनतम करना।
- उदाहरण: "साक्षात्कार के प्रश्न संवेदनशील या परेशान करने वाले विषयों से बचने के लिए तैयार किए गए थे।"

2. शमन के उपाय :

- यदि अप्रत्याशित हानि होती है तो सहायता या रेफरल प्रदान करें।
- उदाहरण: "संकट का अनुभव कर रहे प्रतिभागियों को परामर्श संसाधन प्रदान किए गए।"

डी. नैतिक अनुमोदन

1. संस्थागत अनुमोदन :

- संस्थागत समीक्षा बोर्ड (आईआरबी) या समकक्ष नैतिकता समिति से मंजूरी प्राप्त करें।

2. अनुमोदन विवरण :

- अनुमोदन संख्या और दिनांक शामिल करें.
- उदाहरण: "यह अध्ययन विश्वविद्यालय नैतिकता समिति (अनुमोदन संख्या XYZ123) द्वारा [दिनांक] को अनुमोदित किया गया था।"

ई. पूर्वाग्रह से बचाव

1. परिभाषा :

- पूर्वाग्रह शोध निष्कर्षों को विकृत कर सकता है और विश्वसनीयता को कम कर सकता है।

2. पूर्वाग्रह से बचने के उपाय :

- यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करें।
- सर्वेक्षणों और साक्षात्कारों में तटस्थ भाषा का प्रयोग करें।
- उदाहरण: "प्रश्नों का पूर्व परीक्षण किया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे प्रतिभागियों को विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर नहीं ले जाएं।"

एफ. साहित्यिक चोरी और शैक्षणिक अखंडता

1. साहित्यिक चोरी से बचना :

- बौद्धिक योगदान को स्वीकार करने के लिए सभी स्रोतों का उचित उल्लेख करें।
- उदाहरण: "सभी द्वितीयक डेटा को APA संदर्भ शैली के अनुसार उद्धृत किया गया था।"

2. डेटा प्रामाणिकता सुनिश्चित करना :

- बिना किसी बनावट या मिथ्याकरण के ईमानदारी से निष्कर्षों की रिपोर्ट करें।

3. नैतिक चुनौतियाँ और समाधान

A. चुनौतियाँ

1. प्रतिभागियों की अनिच्छा:
 - कुछ व्यक्ति व्यक्तिगत जानकारी साझा करने में संकोच कर सकते हैं।
2. सांस्कृतिक संवेदनशीलताएँ:
 - कुछ समुदायों में जाति या राजनीतिक संबद्धता जैसे विषय संवेदनशील हो सकते हैं।

बी. समाधान

1. विश्वास बनाएं:
 - प्रतिभागियों के साथ सम्मानपूर्वक बातचीत करें और उनके योगदान का महत्व समझाएं।
 2. सांस्कृतिक अनुकूलन:
 - सांस्कृतिक मानदंडों के अनुरूप अनुसंधान उपकरणों को तैयार करना।
-

4. डेटा प्रबंधन में नैतिक विचार

A. सुरक्षित भंडारण

1. भौतिक डेटा:
 - भौतिक प्रपत्रों को सुरक्षित रूप से संग्रहित करें (जैसे, लॉक की गई अलमारियाँ)।
2. डिजिटल डाटा:
 - फ़ाइलों को एन्क्रिप्ट करें और पासवर्ड सुरक्षा का उपयोग करें।

B. डेटा प्रतिधारण

- डेटा को केवल विश्लेषण और प्रकाशन के लिए आवश्यक समय तक ही रखें।
 - उदाहरण: “अध्ययन पूरा होने के पांच साल बाद सभी डेटा हटा दिए जाएंगे।”
-

5. नैतिक प्रथाओं का दस्तावेजीकरण

अपने शोध-प्रबंध में नैतिक अनुपालन के साक्ष्य शामिल करें:

1. नैतिक अनुमोदन पत्र की प्रति.
2. परिशिष्ट में नमूना सहमति प्रपत्र।
3. प्रतिभागियों की सुरक्षा के लिए उठाए गए उपायों का सारांश।

6. नैतिक विचार अनुभाग लिखने के लिए सुझाव

1. पारदर्शी रहें :
 - अनुसंधान के दौरान अपनाए गए सभी नैतिक उपायों को स्पष्ट रूप से समझाएं।
2. विस्तृत जानकारी दें :
 - नैतिक सिद्धांतों को किस प्रकार क्रियान्वित किया गया, इसके विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करें।
3. संस्थागत दिशानिर्देशों का पालन करें :
 - विश्वविद्यालय की नैतिक नीतियों के साथ संरेखण सुनिश्चित करें।

नैतिक विचारों के लिए नमूना पाठ

"इस अध्ययन में प्रतिभागियों की सुरक्षा और डेटा की अखंडता सुनिश्चित करने के लिए उच्चतम नैतिक मानकों का पालन किया गया। प्रतिभागियों को विस्तृत सहमति पत्र प्रदान किए गए, जिनमें अध्ययन के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं और उनके अधिकारों का विवरण दिया गया था, जिसमें किसी भी समय वापस लेने का विकल्प भी शामिल था। गोपनीयता बनाए रखने के लिए सभी डेटा को गुमनाम रखा गया था, और विश्वविद्यालय आचार समिति (अनुमोदन संख्या XYZ123) से नैतिक अनुमोदन प्राप्त किया गया था। सर्वेक्षणों और साक्षात्कारों में यादृच्छिक नमूनाकरण और तटस्थ शब्दावली के माध्यम से पूर्वाग्रह से बचने का प्रयास किया गया था। डेटा को पाँच वर्षों तक सुरक्षित रूप से संग्रहीत किया जाएगा और फिर स्थायी रूप से हटा दिया जाएगा।"

7. नैतिक विचारों के लिए चेकलिस्ट

1. क्या आपने औपचारिक नैतिक अनुमोदन प्राप्त कर लिया है?
2. क्या प्रतिभागियों ने सूचित सहमति प्रपत्र पर हस्ताक्षर किये हैं?

3. क्या गोपनीयता और गुमनामी सुनिश्चित करने के लिए उपाय मौजूद हैं?
4. क्या आपने संभावित जोखिमों को स्वीकार किया है और उन्हें कम किया है?
5. क्या साहित्यिक चोरी से बचने के लिए सभी द्वितीयक स्रोतों का उचित ढंग से उल्लेख किया गया है?

नैतिक विचारों को पूरी तरह से ध्यान में रखकर, आप अपने शोध की अखंडता को बनाए रखते हैं और प्रतिभागियों और शैक्षणिक समुदाय के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं।

खंड 13: समयरेखा और मील के पथर

अपनी शोध यात्रा की योजना बनाना और उसका प्रबंधन करना

समयरेखा और मील के पथर अनुभाग आपके पीएचडी शोध की संरचित प्रगति को रेखांकित करता है। यह सुनिश्चित करता है कि आपका काम सही दिशा में चलता रहे और आपको, आपके पर्यवेक्षक और मूल्यांकनकर्ताओं को प्रगति की प्रभावी निगरानी करने में मदद करता है। यह अनुभाग आपके समय प्रबंधन और संगठनात्मक कौशल को भी दर्शाता है।

1. समयरेखा और मील के पथर अनुभाग का उद्देश्य

1. अनुसंधान गतिविधियों की योजना बनाएं :
 - परियोजना को स्पष्ट समय-सीमा के साथ प्रबंधनीय चरणों में विभाजित करें।
 2. प्रगति ट्रैक करें :
 - नियमित रूप से मूल्यांकन करें कि क्या आप अपने उद्देश्यों को समय पर पूरा कर रहे हैं।
 3. जवाबदेही बनाए रखें :
 - व्यवस्थित अनुसंधान प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करें।
 4. चुनौतियों के अनुकूल ढलना :
 - आवश्यकतानुसार योजनाओं को समायोजित करने के लिए लचीलापन प्रदान करें।
-

2. अनुसंधान समयरेखा के घटक

एक व्यापक समयरेखा में निम्नलिखित तत्व शामिल हैं:

A. अनुसंधान चरण

अनुसंधान को प्रमुख चरणों में विभाजित करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक चरण आपके उद्देश्यों के अनुरूप हो।

1. प्रस्ताव विकास :

- समय सीमा: 3-6 महीने.
- गतिविधियाँ:
 - प्रारंभिक साहित्य समीक्षा का संचालन करें।
 - शोध अंतरालों की पहचान करें और शोध प्रश्नों को अंतिम रूप दें।
 - अनुसंधान प्रस्ताव का प्रारूप तैयार करें और अनुमोदन हेतु प्रस्तुत करें।
- मील का पत्थर:
 - डॉक्टरल कार्यक्रम समिति (डीपीसी) और अनुसंधान डिग्री समिति (आरडीसी) द्वारा अनुसंधान प्रस्ताव का अनुमोदन।

2. पाठ्यक्रम पूरा करना :

- समय सीमा: 6-12 महीने.
- गतिविधियाँ:
 - अनुसंधान पद्धति पर कक्षाओं में भाग लें।
 - असाइनमेंट जमा करें और पाठ्यक्रम के अंत में परीक्षा उत्तीर्ण करें।
- मील का पत्थर:
 - पाठ्यक्रम पूरा होने का प्रमाणन.

3. डेटा संग्रहण :

- समय सीमा: 6-12 महीने.
- गतिविधियाँ:
 - सर्वेक्षणों का डिजाइन और वितरण करना।
 - साक्षात्कार और फोकस समूह आयोजित करें।
 - द्वितीयक डेटा एकत्र करें.
- मील का पत्थर:
 - विस्तृत लॉग के साथ डेटा संग्रहण का कार्य पूरा करना।

4. डेटा विश्लेषण :

- समय सीमा: 4-6 महीने.

- गतिविधियाँ:
 - डेटा को संसाधित और साफ़ करें.
 - सांख्यिकीय या गुणात्मक विश्लेषण करें।
- मील का पत्थर:
 - विश्लेषित डेटा को समीक्षा के लिए पर्यवेक्षक को प्रस्तुत करना ।

5. थीसिस लेखन :

- समय सीमा: 12-18 महीने.
- गतिविधियाँ:
 - थीसिस के प्रत्येक अध्याय का प्रारूप तैयार करें।
 - पर्यवेक्षक से प्राप्त फीडबैक को शामिल करें।
 - प्री-सबमिशन मौखिक परीक्षा की तैयारी करें।
- मील का पत्थर:
 - प्रस्तुति-पूर्व मौखिक परीक्षा का समापन और पर्यवेक्षक का अनुमोदन।

6. थीसिस प्रस्तुति और बचाव :

- समय सीमा: 3-6 महीने.
- गतिविधियाँ:
 - साहित्यिक चोरी की मंजूरी प्राप्त करें।
 - अंतिम थीसिस को परीक्षा के लिए प्रस्तुत करें।
 - मौखिक परीक्षा की तैयारी करें और उसे पूरा करें।
- मील का पत्थर:
 - थीसिस का अंतिम अनुमोदन और पीएच.डी. की डिग्री प्रदान करना।

बी. मील के पत्थर

अनुसंधान के प्रत्येक चरण का समापन एक मापनीय उपलब्धि के रूप में होना चाहिए। उदाहरणों में शामिल हैं:

1. प्रस्ताव अनुमोदन.
2. पाठ्यक्रम का समापन.
3. मसौदा अध्याय प्रस्तुत करना।
4. प्रकाशित शोध लेख प्रस्तुत करना।
5. थीसिस प्रस्तुति और मौखिक परीक्षा।

3. शोध समयरेखा बनाने के लिए उपकरण

1. गantt चार्ट :

- कार्यों और समयसीमाओं को चार्ट प्रारूप में दर्शाएँ।
- उपकरण: माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल, गूगल शीट्स, या गैटप्रो जैसे विशेष सॉफ्टवेयर।
- उदाहरण:

काम	आरंभ करने की तिथि	अंतिम तिथि	स्थिति
प्रस्ताव विकास	जनवरी 2024	जून 2024	पुरा होना।
डेटा संग्रहण	जुलाई 2024	दिसंबर 2024	प्रगति पर है
थीसिस लेखन	जनवरी 2025	दिसंबर 2025	की योजना बनाई

2. परियोजना प्रबंधन उपकरण :

- कार्यों और समय-सीमाओं पर नज़र रखने के लिए ट्रेलो, असाना या नोशन जैसे उपकरणों का उपयोग करें।

3. चेकलिस्ट :

- व्यवस्थित रहने के लिए मासिक या साप्ताहिक चेकलिस्ट बनाएं।

4. उदाहरण अनुसंधान समयरेखा

वर्ष 1 :

- जनवरी-जून: प्रारंभिक अनुसंधान करें और प्रस्ताव का मसौदा तैयार करें।
- जुलाई-दिसंबर: पाठ्यक्रम में भाग लें और असाइनमेंट पूरा करें।

वर्ष 2 :

- जनवरी-जून: सर्वेक्षण और साक्षात्कार के माध्यम से डेटा एकत्र करें।
- जुलाई-दिसंबर: डेटा विश्लेषण शुरू करें।

वर्ष 3 :

- जनवरी-दिसंबर: थीसिस के अध्याय लिखें और पूर्व-प्रस्तुति मौखिक परीक्षा की तैयारी करें।

वर्ष 4 :

- जनवरी-मार्च: थीसिस को अंतिम रूप देना और जमा करना।
- अप्रैल-जून: मौखिक परीक्षा पूरी करें और पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त करें।

5. मील के पथर प्रबंधित करने के लिए सुझाव

1. यथार्थवादी समय सीमा निर्धारित करें :
 - कार्यों की जटिलता और संभावित चुनौतियों पर विचार करें।
2. नियमित रूप से संवाद करें :
 - नियमित बैठकों के दौरान अपने पर्यवेक्षक को प्रगति के बारे में जानकारी दें।
3. प्रगति की निगरानी करें :
 - यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप सही रास्ते पर हैं, अपनी समय-सीमा की मासिक समीक्षा करें।
4. लचीले ढंग से समायोजित करें :
 - अप्रत्याशित देरी, जैसे कि प्रतिभागियों की अनुपलब्धता या तकनीकी समस्याओं का ध्यान रखें।

6. समयसीमा में चुनौतियों का समाधान

A. सामान्य चुनौतियाँ

1. प्रतिभागियों की अनुपलब्धता के कारण डेटा संग्रहण में देरी हुई।
2. थीसिस ड्राफ्टिंग के दौरान लेखक का अवरोध।
3. पर्यवेक्षक द्वारा संशोधन में अपेक्षा से अधिक समय लग रहा है।

बी. समाधान

1. महत्वपूर्ण कार्यों के लिए समय की आवश्यकता का पहले से ही आकलन कर योजना बनाना शुरू कर दें।
2. लेखन को छोटे-छोटे कार्यों में विभाजित करें और दैनिक लक्ष्य निर्धारित करें।
3. अप्रत्याशित देरी को समायोजित करने के लिए समयरेखा में बफर बनाए रखें।

7. समयरेखा और मील के पथरों के लिए नमूना पाठ

इस अध्ययन के लिए शोध प्रक्रिया को अलग-अलग चरणों में व्यवस्थित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक के स्पष्ट उद्देश्य और लक्ष्य हैं। प्रस्ताव विकास चरण पहले छह महीनों में पूरा हो गया, जिसके परिणामस्वरूप डीपीसी द्वारा शोध प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई। अगले छह महीनों में डेटा संग्रह और उसके बाद चार महीनों तक विश्लेषण का काम निर्धारित है। थीसिस लेखन में बारह महीने लगने की उम्मीद है, जिससे पर्यवेक्षक से प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर पुनरावृत्त संशोधनों की अनुमति मिल सके। नियमित प्रगति समीक्षा इस समय-सीमा का पालन सुनिश्चित करेगी।

8. समयरेखा और मील के पथर के लिए चेकलिस्ट

1. क्या समय-सीमा में अनुसंधान प्रक्रिया के सभी चरण शामिल हैं?
2. क्या सभी मील के पथर मापने योग्य और विशिष्ट हैं?
3. क्या संभावित चुनौतियों और बाधाओं का ध्यान रखा गया है?
4. क्या समयरेखा स्पष्ट और समझने में आसान है?

एक संरचित और सुविचारित समयरेखा प्रस्तुत करके, आप एक पीएच.डी. शोध परियोजना की जटिलताओं को प्रबंधित करने के लिए व्यावसायिकता और तत्परता प्रदर्शित करते हैं।

धारा 14: साहित्यिक चोरी और शैक्षणिक अखंडता

अनुसंधान और लेखन में ईमानदारी बनाए रखना

साहित्यिक चोरी और शैक्षणिक अखंडता अनुभाग नैतिक शोध प्रथाओं के महत्व पर प्रकाश डालता है। यह शोधकर्ता की मौलिकता, उचित श्रेय और संस्थागत दिशानिर्देशों के पालन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। शैक्षणिक अखंडता सुनिश्चित करना विश्वसनीय और सम्मानित शोधकार्य की आधारशिला है।

1. साहित्यिक चोरी को समझना

परिभाषा

साहित्यिक चोरी तब होती है जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के काम—विचारों, शब्दों या डेटा—का बिना उचित स्वीकृति के इस्तेमाल करता है। इसमें शामिल हैं:

1. बिना उद्धरण के पाठ की शब्दशः नकल करना।
2. बिना किसी श्रेय के विचारों का संक्षिप्त वर्णन करना।
3. किसी अन्य के कार्य को अपना बताकर प्रस्तुत करना।
4. स्व-साहित्यिक चोरी: बिना उचित उद्धरण के अपने पूर्व प्रकाशित कार्य के कुछ हिस्सों का पुनः उपयोग करना।

B. साहित्यिक चोरी के प्रकार

1. जानबूझकर :
 - दूसरों के काम की जानबूझकर नकल करना या गलत प्रस्तुति करना।
 2. अनजाने में :
 - समझ की कमी के कारण स्रोतों का उचित ढंग से उल्लेख न कर पाना।
-

2. शैक्षणिक अखंडता का महत्व

1. विश्वसनीयता की रक्षा करता है :

- ईमानदारी बनाए रखने से यह सुनिश्चित होता है कि आपके शोध को गंभीरता से लिया जाएगा।

2. मौलिकता को बढ़ावा :

- स्वतंत्र विचार और नवाचार को बढ़ावा देता है।

3. दिशानिर्देशों का पालन करें :

- संस्थागत नीतियों के साथ संरेखित करता है और शैक्षणिक कदाचार को रोकता है।

3. साहित्यिक चोरी से बचने के उपाय

A. उचित उद्धरण

- निर्धारित संदर्भ शैली (एपीए, एमएलए, या शिकागो) का उपयोग करते हुए सभी स्रोतों को स्वीकार करें।
- उदाहरण:
 - एपीए: (गुप्ता, 2021)
 - विधायक: गुप्ता, रमेश. "मतदाता मतदान के रुझान."
 - शिकागो: गुप्ता, रमेश. *मतदाता मतदान रुझान*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2021.

B. सटीक पैराफ्रेज़िंग

- मूल अर्थ को बरकरार रखते हुए विचारों को अपने शब्दों में पुनः लिखें।
- उदाहरण:
 - मूल: "ग्रामीण मतदाता व्यवहार में जातिगत गतिशीलता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।"
 - संक्षेप में: "ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान पैटर्न जातिगत संबद्धता से काफी प्रभावित होते हैं।"

C. उद्धरण चिह्नों का उपयोग

- प्रत्यक्ष उद्धरण के लिए उद्धरण चिह्नों का प्रयोग करें और स्रोत का उल्लेख करें।

D. साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले उपकरणों का उपयोग करें

- मौलिकता सुनिश्चित करने के लिए DrillBit , Turnitin, Grammarly, या URKUND जैसे सॉफ्टवेयर का उपयोग करें।

- इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने अंतिम प्रस्तुति से पहले शोधकर्ताओं द्वारा अपने पर्यवेक्षकों के माध्यम से उपयोग किए जाने के लिए ड्रिलबिट साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाला सॉफ्टवेयर खरीदा।

4. साहित्यिक चोरी पर संस्थागत नीतियां

A. साहित्यिक चोरी की सीमा

1. स्वीकार्य समानता सूचकांक: आमतौर पर 10% से कम।
2. अत्यधिक समानता या दोहराव के कारण दंड हो सकता है।

B. साहित्यिक चोरी के परिणाम

1. थीसिस या लेख की अस्वीकृति।
2. गंभीर मामलों में शैक्षणिक परिवीक्षा या निष्कासन।
3. प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता को नुकसान।

C. मौलिकता की घोषणा

- एक हस्ताक्षरित बयान शामिल करें जिसमें यह दावा किया गया हो कि आपका शोध-प्रबंध साहित्यिक चोरी से मुक्त है।
- उदाहरण:
 - मैं एतद्वारा घोषणा करता/करती हूँ कि यह शोध-प्रबंध मेरा मौलिक कार्य है और इसे कहीं और प्रस्तुत नहीं किया गया है। सभी स्रोतों का आभार व्यक्त किया गया है।

5. शैक्षणिक अखंडता सुनिश्चित करने के उपकरण

A. साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाला सॉफ्टवेयर

1. टर्नितिन :
 - अप्रमाणिक सामग्री को उजागर करते हुए समानता रिपोर्ट तैयार करता है।
2. उरकुंड :
 - भारतीय शैक्षणिक संस्थानों द्वारा नकल का पता लगाने के लिए विश्वसनीय।
3. व्याकरण :

- साहित्यिक चोरी और व्याकरण संबंधी समस्याओं की जांच करता है।

बी. संदर्भ प्रबंधन उपकरण

1. स्रोतों को व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित करने और उद्धृत करने के लिए ज़ोटेरो, मेंडली या एंडनोट।

6. शैक्षणिक अखंडता बनाए रखने के लिए सुझाव

1. मौलिक विचारों से शुरुआत करें :
 - अपने शोध को अद्वितीय दृष्टिकोण या डेटा से तैयार करें।
2. विस्तृत नोट्स लें :
 - साहित्य समीक्षा के दौरान स्रोतों को सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड करें।
3. उद्धरण के लिए समय की योजना बनाएं :
 - लेखन के दौरान संदर्भों को सही ढंग से प्रारूपित करने के लिए समय समर्पित करें।
4. नियमों को समझें :
 - संस्थान की शैक्षणिक अखंडता नीति से परिचित हो जाएं।

7. आकस्मिक साहित्यिक चोरी से निपटना

A. सामान्य गलतियाँ

1. संक्षिप्त विचारों का उल्लेख करना भूल जाना।
2. प्रत्यक्ष उद्धरण के आसपास उद्धरण चिह्नों का गलत स्थान लगाना।
3. द्वितीयक स्रोतों को प्राथमिक स्रोतों के रूप में उद्धृत करना।

B. उन्हें कैसे ठीक करें

1. प्रस्तुत करने से पहले उद्धरणों की दोबारा जांच करें।
2. पाठ को साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले सॉफ्टवेयर के माध्यम से चलाएं।
3. अस्पष्ट मामलों के लिए अपने पर्यवेक्षक से मार्गदर्शन लें।

8. साहित्यिक चोरी और शैक्षणिक अखंडता के लिए नमूना पाठ

"यह शोध प्रबंध अकादमिक अखंडता पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दिशानिर्देशों का पालन करता है। सभी स्रोतों को एपीए संदर्भ शैली का पालन करते हुए उचित रूप से उद्धृत किया गया है, और मौलिकता की पुष्टि टर्नटिन का उपयोग करके की गई है। संस्थागत मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए 10% से कम का समानता सूचकांक बनाए रखा गया है। यह शोध इस क्षेत्र में मेरे मौलिक योगदान का प्रतिनिधित्व करता है, जो विश्वसनीय और नैतिक रूप से प्राप्त आंकड़ों द्वारा समर्थित है।"

9. शैक्षणिक अखंडता के लिए चेकलिस्ट

1. क्या सभी स्रोतों का उचित उल्लेख किया गया है?
 2. क्या शोध-प्रबंध की साहित्यिक चोरी के लिए जांच सॉफ्टवेयर का उपयोग करके की गई है?
 3. क्या थीसिस में मौलिकता की घोषणा शामिल है?
 4. क्या द्वितीयक स्रोतों को उचित रूप से स्वीकार किया जाता है?
-

10. ईमानदारी बनाए रखने के नैतिक निहितार्थ

अकादमिक अखंडता सुनिश्चित करके, शोधकर्ता न केवल अपने संस्थान के मानकों को बनाए रखते हैं, बल्कि विद्वानों के काम में वैश्विक विश्वास को भी बढ़ावा देते हैं।

मौलिकता की घोषणा का उदाहरण

"मैं घोषणा करता/करती हूँ कि 'ग्रामीण भारत में मतदाता मतदान के निर्धारक' शीर्षक वाला यह शोध प्रबंध मेरा मौलिक कार्य है। यह साहित्यिक चोरी से मुक्त है और सभी स्रोतों का विधिवत उल्लेख किया गया है। मैं पुष्टि करता/करती हूँ कि यह शोध इलाहाबाद विश्वविद्यालय की शैक्षणिक अखंडता नीति का अनुपालन करता है।"

साहित्यिक चोरी को संबोधित करके और शैक्षणिक अखंडता का पालन सुनिश्चित करके, यह खंड आपकी थीसिस को राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में एक विश्वसनीय और नैतिक योगदान के रूप में स्थापित करता है।

खंड 15: शब्दावली

बेहतर समझ के लिए शब्दों को स्पष्ट करना

शब्दावली आपके शोध प्रबंध का एक महत्वपूर्ण भाग है, जो आपके शोध से संबंधित तकनीकी शब्दों, संक्षिप्त रूपों और अवधारणाओं की परिभाषाएँ प्रदान करता है। यह सुनिश्चित करता है कि पाठक, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, बिना किसी अस्पष्टता के आपके काम को पूरी तरह से समझ सकें।

1. शब्दावली का उद्देश्य

1. मुख्य शब्द परिभाषित करें :

- थीसिस में प्रयुक्त विशेष शब्दावली, शब्दजाल या असामान्य शब्दों को स्पष्ट करें।

2. सुगम्यता में सुधार :

- थीसिस को व्यापक दर्शकों के लिए समझने योग्य बनाएं, जिसमें गैर-विशेषज्ञ भी शामिल हों।

3. स्थिरता सुनिश्चित करें :

- गलत व्याख्या से बचने के लिए परिभाषाओं को मानकीकृत करें।
-

2. शब्दावली के तत्व

A. मुख्य शब्द

अपने शोध प्रबंध में अक्सर संदर्भित अवधारणाओं, सिद्धांतों या शब्दों को शामिल करें।

• उदाहरण :

- **चुनावी भागीदारी** : चुनाव के दौरान नागरिकों द्वारा अपना वोट डालने का कार्य।
- **जाति गतिशीलता** : सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार पर जाति-आधारित संबद्धता का प्रभाव।

बी. संक्षिप्तीकरण

अपने शोध प्रबंध में प्रयुक्त संक्षिप्त रूपों के पूर्ण रूप बताएं।

- उदाहरण :

- **ईसीआई** : भारत का चुनाव आयोग।
- **विधायक** : विधान सभा का सदस्य।

सी. तकनीकी शब्द

विषय-विशिष्ट शब्दावली शामिल करें जो सभी पाठकों के लिए परिचित न हो।

- उदाहरण :

- **तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत** : एक ढांचा जो यह सुझाव देता है कि व्यक्ति व्यक्तिगत लाभ को अधिकतम करने के लिए लागत और लाभ को तौलकर निर्णय लेते हैं।
- **व्यवहार सिद्धांत** : एक सिद्धांत जो व्यक्तिगत व्यवहार पर मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव पर जोर देता है।

3. शब्दावली का प्रारूपण

1. वर्णमाला क्रम :

- आसान नेविगेशन के लिए प्रविष्टियों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करें।

2. सुसंगत शैली :

- शब्दों के लिए बोल्ड और परिभाषाओं के लिए सामान्य पाठ का प्रयोग करें।

3. स्पष्ट एवं संक्षिप्त परिभाषाएँ :

- लंबी व्याख्या से बचें; स्पष्टता और संक्षिप्तता का लक्ष्य रखें।

4. नमूना शब्दावली प्रविष्टियाँ

A. मुख्य शब्द

- **मतपत्र थकान** : वह घटना जिसमें मतदाता लंबे मतपत्र पर आगे बढ़ते समय रुचि या ध्यान खो देते हैं, तथा प्रायः कुछ भागों को छोड़ देते हैं।

- **लोकतांत्रिक घाटा** : ऐसी स्थिति जहां लोकतांत्रिक संस्थाएं लोकतांत्रिक सिद्धांतों, जैसे प्रतिनिधित्व या जवाबदेही को पूरा करने में विफल रहती हैं।

बी. संक्षिप्तीकरण

- **एफपीटीपी** : फर्स्ट-पास्ट-द-पोस्ट, एक चुनावी प्रणाली जिसमें सबसे अधिक वोट पाने वाला उम्मीदवार जीतता है।
- **एनजीओ** : गैर-सरकारी संगठन, एक गैर-लाभकारी संस्था जो सरकार की भागीदारी से स्वतंत्र रूप से संचालित होती है।

सी. तकनीकी शब्द

- **बहुसरेखता (Multicollinearity)** : प्रतिगमन विश्लेषण में एक सांख्यिकीय घटना जहां दो या अधिक स्वतंत्र चर अत्यधिक सहसंबद्ध होते हैं, जो संभावित रूप से परिणामों को विकृत कर सकते हैं।
- **विषयगत कोडिंग** : एक गुणात्मक डेटा विश्लेषण विधि जिसका उपयोग डेटा के भीतर पैटर्न (विषयों) की पहचान, विश्लेषण और रिपोर्ट करने के लिए किया जाता है।

5. शब्दावली बनाने के चरण

1. **शब्दों की पहचान करें** :
 - अपने शोध-प्रबंध की समीक्षा करें और सभी तकनीकी शब्दों, संक्षिप्त रूपों और असामान्य अवधारणाओं को नोट कर लें।
2. **स्पष्ट रूप से परिभाषित करें** :
 - सुनिश्चित करें कि परिभाषाएँ सटीक हों और अनुशासन-विशिष्ट मानकों के अनुरूप हों।
3. **व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित करें** :
 - सुसंगत स्वरूपण सुनिश्चित करते हुए शब्दों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करें।

6. शब्दावली लिखने के लिए सुझाव

1. **प्रासंगिकता पर ध्यान दें** :
 - केवल अपने शोध से सीधे संबंधित शब्द ही शामिल करें।
2. **सरल भाषा का प्रयोग करें** :

- जटिल या घुमावदार परिभाषाओं से बचें।

3. प्रति संदर्भ :

- यदि आवश्यक हो तो पृष्ठ संख्या या अनुभाग शामिल करें जहां शब्द पहली बार प्रस्तुत किया गया है।

7. शब्दावली के लाभ

1. पाठक-अनुकूल :

- विशिष्ट शब्दावली से अपरिचित पाठकों की समझ को बढ़ाता है।

2. व्यावसायिक प्रस्तुति :

- यह सम्पूर्णता और विस्तार पर ध्यान को दर्शाता है।

3. अतिरेक को कम करता है :

- मुख्य पाठ में शब्दों को बार-बार समझाने से बचें।

शब्दावली अनुभाग के लिए नमूना पाठ

शब्दकोष

- **व्यवहार सिद्धांत** : एक सैद्धांतिक ढांचा जो जांच करता है कि मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक कारक व्यक्तिगत और समूह व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं।
- **जातिगत गतिशीलता** : सामाजिक और राजनीतिक कार्यों को आकार देने में जातिगत पहचान की भूमिका और प्रभाव।
- **चुनावी भागीदारी** : चुनावों में मतदान करने का कार्य, जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में नागरिकों की भागीदारी को दर्शाता है।
- **एफपीटीपी (फर्स्ट-पास्ट -द-पोस्ट)** : एक चुनावी प्रणाली जिसमें किसी निर्वाचन क्षेत्र में सबसे अधिक वोट पाने वाला उम्मीदवार जीतता है।
- **एनजीओ (गैर-सरकारी संगठन)** : एक स्वतंत्र संगठन जो सरकारी नियंत्रण के बिना संचालित होता है, तथा अक्सर सामाजिक या राजनीतिक मुद्दों को संबोधित करता है।

8. शब्दावली के लिए चेकलिस्ट

1. क्या आपने सभी तकनीकी शब्द, संक्षिप्त रूप और असामान्य अवधारणाएं शामिल की हैं?
2. क्या परिभाषाएँ स्पष्ट, संक्षिप्त और सुसंगत हैं?
3. क्या पद वर्णानुक्रम में व्यवस्थित हैं?
4. क्या शब्दावली आपके शोध प्रबंध की सुगमता को बढ़ाती है?

एक अच्छी तरह से संरचित शब्दावली को शामिल करके, आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपका शोध सुलभ, समझने योग्य और पेशेवर रूप से प्रस्तुत किया गया है, जो विविध दर्शकों की जरूरतों को पूरा करता है।

खंड 16: पीएच.डी. सारांश लेखन

I. पृष्ठभूमि

किसी शोध प्रबंध का पृष्ठभूमि भाग उस आधार का काम करता है जिस पर संपूर्ण अध्ययन आधारित होता है। यह विषय क्षेत्र के बारे में प्रासंगिक जानकारी प्रस्तुत करके, शोध के महत्व को समझाकर और अध्ययन को उचित ठहराने वाले ढाँचे को स्थापित करके शोध समस्या को संदर्भ प्रदान करता है। नीचे पृष्ठभूमि भाग का व्यवस्थित और विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. समस्या या मुद्दे का अवलोकन
 - जिस समस्या या मुद्दे की जांच की जा रही है उसे स्पष्ट रूप से परिभाषित करें।
 - बताएं कि यह समस्या महत्वपूर्ण क्यों है और यह संबंधित क्षेत्र को कैसे प्रभावित करती है।
 - एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करें जो अनुसंधान के सार को समाहित करता हो।
2. विषय का ऐतिहासिक विकास
 - विषय के विकास का पता लगाएं, जिसमें प्रमुख मील के पथर और समझ में बदलाव शामिल हैं।
 - उन महत्वपूर्ण घटनाओं या अध्ययनों पर प्रकाश डालें जिन्होंने ज्ञान की वर्तमान स्थिति को आकार दिया है।
 - किसी भी ऐतिहासिक विवाद या बहस पर चर्चा करें जिसने विषय के विकास को प्रभावित किया हो।
3. प्रमुख विषय, अवधारणाएँ और सिद्धांत
 - अनुसंधान के लिए केन्द्रीय प्रमुख विषयों की पहचान करें और उनकी व्याख्या करें।
 - अनुसंधान समस्या को समझने के लिए प्रासंगिक प्रमुख अवधारणाओं का परिचय दें।
 - अध्ययन को निर्देशित करने वाले सैद्धांतिक ढाँचों पर चर्चा करें, और समझाएँ कि वे शोध के लिए किस प्रकार आधार प्रदान करते हैं।
 - पिछले अध्ययनों में इन सिद्धांतों का उपयोग कैसे किया गया है, इसके उदाहरण प्रदान करें।
4. मौजूदा साहित्य में अंतराल
 - मौजूदा साहित्य में उन अंतरालों या सीमाओं को उजागर करें जो इस शोध की आवश्यकता को उचित ठहराते हैं।

- चर्चा करें कि वर्तमान शोध किस प्रकार इन अंतरालों को दूर करेगा और क्षेत्र में नए ज्ञान का योगदान देगा।

- पिछले अध्ययनों के उदाहरण प्रदान करें जिनमें अनुत्तरित प्रश्न या अनछुए क्षेत्र रह गए हैं।

5. अंतराल को संबोधित करने का महत्व

- समझाइए कि इन अंतरालों को संबोधित करना सिद्धांत और व्यवहार दोनों के लिए महत्वपूर्ण क्यों है।

- शिक्षा जगत, नीति निर्माताओं और चिकित्सकों पर अनुसंधान के संभावित प्रभाव पर चर्चा करें।

- स्पष्ट रूप से बताएं कि यह शोध इस क्षेत्र को आगे बढ़ाने में किस प्रकार योगदान देगा।

6. व्यापक संदर्भ और प्रासंगिकता

- अनुसंधान को सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक आयामों सहित व्यापक संदर्भ में रखें।

- चर्चा करें कि शोध वर्तमान मुद्दों या चुनौतियों के लिए कैसे समयोचित और प्रासंगिक है।

- अनुसंधान के वास्तविक विश्व पर पड़ने वाले व्यावहारिक प्रभावों पर प्रकाश डालें।

7. शोध प्रश्न और उद्देश्य

- उन शोध प्रश्नों को स्पष्ट रूप से बताएं जिनका उत्तर अध्ययन में दिया जाना है।

- बताएं कि ये प्रश्न पृष्ठभूमि चर्चा से कैसे उभरते हैं और पहचाने गए अंतरालों से कैसे संबंधित हैं।

- अध्ययन के उद्देश्यों को सूचीबद्ध करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे शोध प्रश्नों के साथ संरेखित हों।

8. पृष्ठभूमि का सारांश

- पृष्ठभूमि में शामिल मुख्य बिंदुओं का सारांश प्रस्तुत करें, तथा अनुसंधान विधियों वाले भाग में संक्रमण प्रदान करें।

- अनुसंधान के महत्व और आगे की जांच की आवश्यकता पर बल दें।

II. साहित्य की समीक्षा (लगभग 6 पृष्ठ)

साहित्य समीक्षा, शोध के चुने हुए विषय/विषय पर अकादमिक लेखन का एक सर्वेक्षण है। यह शोध डिज़ाइन का एक अनिवार्य हिस्सा है क्योंकि यह शोध का संदर्भ निर्धारित करता है। विषय पर साहित्य की गहन समीक्षा दोहराव को रोकेगी और साथ ही, शोधकर्ता के ज्ञान और विषय-वस्तु की समझ को प्रदर्शित करके विश्वसनीयता प्रदान करेगी।

साहित्य समीक्षा का अर्थ केवल विषय पर महत्वपूर्ण संदर्भों की सूची बनाना या उनका सारांश देना नहीं है। इसका उद्देश्य विषय/विषय की संक्षिप्त समझ प्रदान करना है, जिससे प्रस्तावित अध्ययन प्रासंगिक बन सके। इस प्रक्रिया को विषय पर चल रही चर्चाओं में शोध को शामिल करके शोधकर्ता और व्यापक शैक्षणिक समुदाय के बीच एक कड़ी का काम भी करना चाहिए।

प्रस्तावित अध्ययन और विषय पर मौजूदा कार्यों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए साहित्य की समीक्षा आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, यह इस बात की पहचान करके कि हम क्या जानते हैं और क्या नहीं, 'आधुनिक स्थिति' को दर्शाता है। ऐसा करने से, शोध/साहित्य के अंतरालों की प्रभावी पहचान की जा सकती है, जिससे प्रस्तावित शोध के महत्व पर प्रकाश डाला जा सकता है और विषय पर मौजूदा कार्यों/साहित्य में शोध को कैसे शामिल किया जाए, यह भी पता चलता है।

साहित्य की समीक्षा विषयगत रूप से संरचित होनी चाहिए। स्पष्टता सुनिश्चित करने के लिए अध्ययन के विषय/विषय को व्यापक विषयों पर आधारित विभिन्न खंडों में विभाजित किया जा सकता है।

III. अध्ययन का तर्क और दायरा

अध्ययन का औचित्य विषय के महत्व को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करता है। यह अध्ययन का औचित्य प्रदान करता है और इस प्रश्न का समाधान करता है कि अध्ययन क्यों आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, इस प्रश्न का उत्तर कि कोई अध्ययन क्यों किया गया या क्यों किया जाना चाहिए, अध्ययन के औचित्य में निहित है। यह उन प्रमुख कमियों को भी दर्शाता है जिनका अध्ययन आगे चलकर समाधान करेगा। शोध प्रस्ताव में अध्ययन के औचित्य का विवरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अध्ययन की नवीनता और अन्य विद्यमान शोध एवं विद्वत्तापूर्ण कार्यों से इसके अंतर को स्पष्ट करता है। अध्ययन का दायरा शोध के दायरे से संबंधित है। यह अध्ययन की सीमाओं को परिभाषित और स्पष्ट करता है। यह यह भी बताता है कि शोधकर्ता मुख्य रूप से किस पर ध्यान केंद्रित करता है। अध्ययन के दायरे को लिखने का अर्थ है उन आयामों को लिखना जिन पर अध्ययन में चर्चा और शोध किया जाएगा। अध्ययन का दायरा पाठक को उन पहलुओं के बारे में भी सूचित करता है जिन्हें अध्ययन में शामिल नहीं किया गया है। यह खंड उन विषयों की व्याख्या करता है जो अध्ययन के दायरे से बाहर हैं। अध्ययन का दायरा पाठक को शोध तकनीकों, नमूना आकार आदि जैसे क्षेत्रों में अध्ययन की प्रमुख बाधाओं के बारे में बताता है। यह शोध के मानदंडों की भी व्याख्या करता है। अध्ययन के दायरे का स्पष्ट खाका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शोध को निर्धारित समय के भीतर और मौजूदा सीमित संस्थागत और वित्तीय संसाधनों के उपयोग से प्राप्त करने योग्य और व्यवहार्य बनाता है।

IV. तलाश पद्धतियाँ

शोध विधि अनुभाग अध्ययन के संचालन के लिए प्रयुक्त दृष्टिकोण और तकनीकों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। इसमें शोध प्रश्नों के प्रभावी उत्तर देने के लिए उपयुक्त विधियों का चयन करना शामिल है। निम्नलिखित बिंदु शोध विधि अनुभाग का विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं:

1. अनुसंधान डिजाइन

- समग्र अनुसंधान डिजाइन को परिभाषित करें (जैसे, मात्रात्मक, गुणात्मक, या मिश्रित-विधि)।

- बताइए कि चुना गया शोध डिजाइन शोध प्रश्नों के समाधान के लिए क्यों उपयुक्त है।
 - समान डिजाइन का उपयोग करने वाले समान अनुसंधान के उदाहरण प्रदान करें, तथा इसकी उपयुक्तता पर जोर दें।
2. अनुसंधान के प्रति दृष्टिकोण
- चर्चा करें कि शोध अन्वेषणात्मक, वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक या प्रयोगात्मक है।
 - बताएं कि चुना गया दृष्टिकोण शोध उद्देश्यों और प्रश्नों के साथ किस प्रकार संरेखित है।
 - वैकल्पिक तरीकों की तुलना में इस दृष्टिकोण को क्यों चुना गया, इसका तर्क दीजिए।
3. डेटा संग्रह विधियाँ
- अध्ययन में प्रयुक्त डेटा संग्रह विधियों का वर्णन करें (जैसे, सर्वेक्षण, साक्षात्कार, प्रयोग, दस्तावेज़ विश्लेषण)।
 - बताइए कि आवश्यक जानकारी एकत्र करने के लिए ये विधियाँ क्यों उपयुक्त हैं।
 - डेटा संग्रहण प्रक्रिया किस प्रकार की जाएगी, इसके बारे में विवरण प्रदान करें, जिसमें प्रयुक्त उपकरण या साधन भी शामिल हों।
4. डेटा संग्रह उपकरण
- डेटा संग्रह के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों का विवरण दें (जैसे, प्रश्नावली, साक्षात्कार मार्गदर्शिका, अवलोकन चेकलिस्ट)।
 - बताएं कि इन उपकरणों को अध्ययन के लिए कैसे विकसित या अनुकूलित किया गया।
 - उपकरणों की वैधता और विश्वसनीयता पर चर्चा करें, तथा बताएं कि वे कैसे सटीक और सुसंगत डेटा संग्रह सुनिश्चित करेंगे।
5. नमूनाकरण विधियाँ
- प्रतिभागियों या डेटा स्रोतों (जैसे, यादृच्छिक नमूनाकरण, उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण) का चयन करने के लिए उपयोग की जाने वाली नमूनाकरण तकनीकों की व्याख्या करें।
 - चुनी गई नमूनाकरण विधि का औचित्य बताएं और बताएं कि यह शोध उद्देश्यों के साथ किस प्रकार संरेखित है।
 - नमूना आकार, प्रतिभागियों की विशेषताओं और किसी भी समावेशन/बहिष्करण मानदंड के बारे में विवरण प्रदान करें।
6. डेटा विश्लेषण तकनीकें

- एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों का वर्णन करें (जैसे, सांख्यिकीय विश्लेषण, विषयगत विश्लेषण)।

- बताइए कि शोध प्रश्नों के समाधान के लिए ये तकनीकें क्यों उपयुक्त हैं।

- विश्लेषण के लिए उपयोग किए गए सॉफ्टवेयर या टूल के बारे में विवरण प्रदान करें , और बताएं कि डेटा की व्याख्या कैसे की जाएगी।

7. नैतिक विचार

- अनुसंधान के दौरान उत्पन्न होने वाले नैतिक मुद्दों पर चर्चा करें तथा बताएं कि उनका समाधान कैसे किया जाएगा।

- प्रतिभागियों से सूचित सहमति प्राप्त करने की प्रक्रियाओं की व्याख्या करें।

- गोपनीयता, डेटा संरक्षण और प्रतिभागियों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए उपायों पर प्रकाश डालें।

8. अनुसंधान विधियों की सीमाएँ

- चुने गए शोध तरीकों में संभावित सीमाओं या चुनौतियों की पहचान करें।

- अध्ययन की वैधता सुनिश्चित करने के लिए इन सीमाओं को कैसे प्रबंधित या कम किया जाएगा, इस पर चर्चा करें।

- शोध निष्कर्षों पर इन सीमाओं के संभावित प्रभाव पर एक प्रतिबिंब प्रदान करें।

9. डेटा संग्रह की प्रक्रियाएँ

- समयसीमा और जिम्मेदारियों सहित डेटा एकत्र करने की चरण-दर-चरण प्रक्रिया की रूपरेखा तैयार करें।

- वर्णन करें कि संग्रहण प्रक्रिया के दौरान डेटा की गुणवत्ता कैसे सुनिश्चित की जाएगी।

- डेटा संग्रहण के दौरान किसी भी अप्रत्याशित चुनौतियों के प्रबंधन के लिए एक योजना प्रदान करें।

10. पुनरुत्पादनशीलता और पारदर्शिता

- चर्चा करें कि शोध विधियाँ किस प्रकार सुनिश्चित करेंगी कि अध्ययन को अन्य शोधकर्ताओं द्वारा भी दोहराया जा सके।

- भविष्य में संदर्भ के लिए डेटा और विधियों को कैसे प्रलेखित किया जाएगा, इस पर विवरण प्रदान करें।

- अनुसंधान प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए किसी भी उपाय पर प्रकाश डालें।

11. अनुसंधान विधियों का सारांश

- शोध विधियों के प्रमुख तत्वों का सारांश प्रस्तुत करें, तथा इस बात पर बल दें कि वे शोध प्रश्नों और उद्देश्यों के साथ किस प्रकार संरेखित हैं।
- वैध और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक अच्छी तरह से संरचित कार्यप्रणाली के महत्व को सुदृढ़ करें।
- डेटा प्रस्तुति और व्याख्या पर ध्यान केंद्रित करते हुए, शोध मैनुअल के अगले भाग में संक्रमण प्रदान करें।

v. पीएचडी थीसिस अध्याय

एक पीएचडी थीसिस आदर्श रूप से अस्सी हजार शब्दों और दो सौ पृष्ठों की होनी चाहिए। शोधकर्ता को 12-पॉइंट टाइम्स न्यू रोमन फ्रॉन्ट और 1.5 लाइन स्पेसिंग की आवश्यकता होगी। थीसिस की संरचना में शीर्षक पृष्ठ, घोषणा, आभार, सार, विषय-सूची, आंकड़ों की सूची, सारणियाँ और संक्षिप्ताक्षर, अध्याय, संदर्भ और परिशिष्ट शामिल होने चाहिए। थीसिस में आमतौर पर छह अध्याय होते हैं जिनमें परिचय और निष्कर्ष के साथ एक पृष्ठ का सारांश भी शामिल होता है। प्रत्येक अध्याय की शुरुआत में एक सार और अंत में एक संक्षिप्त सारांश होना चाहिए, प्रत्येक अध्याय एक पैराग्राफ लंबा होना चाहिए।

आमतौर पर, कोई भी शोध एक प्रश्न से शुरू होता है, जिसे अध्याय एक (लगभग 15-20 पृष्ठ) में मान्यताओं के साथ-साथ शोध प्रश्नों के रूप में दर्शाया जाना चाहिए। इसमें शोध समस्या को भी स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए। इसमें अध्ययन का उद्देश्य और शोध का महत्व भी शामिल होना चाहिए। शोधकर्ता को अध्ययन की सीमाओं के साथ-साथ शब्दों को भी स्पष्ट रूप से परिभाषित करना चाहिए। हालाँकि, शोधकर्ता को स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करने चाहिए। शोधकर्ता को यह स्पष्ट करना चाहिए कि उसे यह अध्ययन करने के लिए क्या प्रेरित करता है। इसके अलावा, शोधकर्ता को शोध प्रबंध की संरचना को व्यवस्थित करने में सक्षम होना चाहिए जिसे पाठ या आरेख के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

अध्याय दो (लगभग 35-40 पृष्ठ) संबंधित साहित्य की समीक्षा होनी चाहिए, जिसकी शुरुआत एक सारांश से होनी चाहिए और अंत में एक-एक पैराग्राफ का संक्षिप्त सारांश होना चाहिए। हालाँकि, यह अध्याय मुख्य रूप से विशिष्ट विषय पर विद्वानों के स्रोतों की समीक्षा पर केंद्रित है। इसके अतिरिक्त, इसमें विषय पर मौजूदा ज्ञान की रूपरेखा भी होनी चाहिए। इसमें मौजूदा ज्ञान में मौजूद कमियों की भी पहचान होनी चाहिए। साहित्य समीक्षा में नए शोध के लिए विचारों के उपयोग का आधार भी तैयार किया जाना चाहिए।

तीसरा अध्याय (लगभग 25-30 पृष्ठ) कार्यप्रणाली पर केंद्रित होना चाहिए। सामान्यतः, कार्यप्रणाली अध्याय के दो घटक होते हैं। सैद्धांतिक अभिविन्यास और औचित्य पहला घटक है जिसे कभी-कभी शोध दृष्टिकोण भी कहा जाता है। दूसरा घटक आँकड़ा संग्रहण और विश्लेषण होगा जो शोध कैसे किया जाएगा, इसकी विशिष्टताओं का विवरण देता है। इस अध्याय का एक प्रमुख उद्देश्य शोध की

विश्वसनीयता और शोधकर्ता की विश्वसनीयता स्थापित करना है। इसलिए, शोधकर्ता को कार्यप्रणाली संबंधी दृष्टिकोणों को स्पष्ट रूप से समझाने और आँकड़ा संग्रहण विधियों का वर्णन करने में सक्षम होना चाहिए। अंत में, शोधकर्ता को अपने द्वारा चुने गए कार्यप्रणाली संबंधी विकल्पों का मूल्यांकन और औचित्य सिद्ध करना चाहिए।

चौथा अध्याय (लगभग 35-40 पृष्ठ) निष्कर्षों से संबंधित है। इस अध्याय में शोधकर्ताओं को अपने निष्कर्षों को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करना चाहिए। यदि शोधकर्ता मिश्रित पद्धति का उपयोग करता है, तो उसे पहले मात्रात्मक निष्कर्ष और फिर गुणात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत करने होंगे। इस अध्याय में, यदि लागू हो, तो सांख्यिकीय विश्लेषण और उसके बाद परिणामों की व्याख्या भी शामिल है। अन्य अध्यायों की तरह, निष्कर्ष अध्याय भी एक पैराग्राफ के सारांश से शुरू होना चाहिए और एक पैराग्राफ के संक्षिप्त सारांश के साथ समाप्त होना चाहिए।

पाँचवाँ अध्याय (लगभग 25-30 पृष्ठ) एक चर्चा अध्याय होना चाहिए जो शोध प्रश्नों के अनुरूप निष्कर्षों के संश्लेषण पर ज़ोर देता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्याय निष्कर्षों के निहितार्थों और अध्ययन की सीमाओं पर भी प्रकाश डालता है। यह अध्याय एक सारांश से शुरू होता है और एक-एक अनुच्छेद के संक्षिप्त सारांश के साथ समाप्त होता है।

सारांश हो। इस खंड में, शोधकर्ता के प्रत्येक निष्कर्ष, क्षेत्र में योगदान, सिफारिशों और भविष्य की शोध दिशाओं की संक्षिप्त समीक्षा करें। इस अध्याय की शुरुआत भी एक पैराग्राफ के आरंभ में एक सारांश और अंत में एक पूरे पृष्ठ के सारांश से होनी चाहिए।

पीएचडी थीसिस का अंतिम भाग संदर्भ और परिशिष्ट हैं। पीएचडी थीसिस के लिए संदर्भ लिखते समय, शोधकर्ता विभिन्न उद्धरण शैलियों का उपयोग कर सकते हैं - एपीए, एमएलए या शिकागो नोट्स और ग्रंथ सूची। हालाँकि, सामाजिक और व्यवहार विज्ञान के लिए एपीए सबसे लोकप्रिय शैली है, जबकि मानविकी में एमएलए दूसरी सबसे लोकप्रिय शैली है। शिकागो नोट्स और ग्रंथ सूची मानविकी, विशेष रूप से इतिहास, में भी लोकप्रिय हैं। फिर भी, शोधकर्ता को अपने मूल संस्थान द्वारा अनुशंसित उद्धरण शैली का पालन करना चाहिए।

vi. उद्धरण, फुटनोट, ग्रंथसूची और संदर्भ शैली मार्गदर्शिकाएँ

शोध विद्वान/छात्र दूसरों के काम को स्वीकार करने के लिए जिम्मेदार हैं, जिसमें उनके अपने काम में प्रयुक्त तथ्य, विचार, सूचना, छवि, व्याख्या, विश्लेषण, डिजाइन या सामग्री शामिल हैं।

प्रशस्ति पत्र

अकादमिक लेखन में उद्धरण, किसी कार्य में प्रयुक्त किसी भी तथ्य या तथ्यात्मक जानकारी, विचार, सामग्री, डिजाइन, व्याख्या, विश्लेषण या अन्य छवियों के स्रोत को स्वीकार करने का एक तरीका है। अकादमिक लेखन में उद्धरण कई प्रकार के होते हैं, जिनमें पाठ में उद्धरण (जिन्हें पैरेंटेटिकल उद्धरण भी कहा जाता है), नोट उद्धरण (फुटनोट उद्धरण और एंडनोट उद्धरण), और कभी-कभी नोट उद्धरण को संख्यात्मक उद्धरण कहा जाता है। इसमें, छात्र को अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (APA) द्वारा प्रकाशित पाठ में उद्धरण शैली का पालन करना चाहिए।

पाठ में उद्धरण दो प्रकार के होते हैं: कोष्ठकीय और वर्णनात्मक। कोष्ठकीय उद्धरणों में, लेखक का उपनाम और प्रकाशन वर्ष, और कभी-कभी पृष्ठ संख्या कोष्ठक में दी जाती है, जबकि वर्णनात्मक उद्धरणों में, जानकारी वाक्य में ही शामिल होती है (नीचे दिए गए उदाहरण देखें)।

मैककॉली, एस.एम., और क्रिस्टियनसेन, एम.एच. (2019)। भाषा के प्रयोग के रूप में भाषा सीखना: बाल भाषा विकास का एक क्रॉस-भाषाई मॉडल। मनोवैज्ञानिक समीक्षा, 126(1), 1-51।

पैरेन्थेटिकल उद्धरण: (मैककॉली और क्रिस्टियनसेन, 2019, पृष्ठ संख्या)

कथात्मक उद्धरण: मैककॉली और क्रिस्टियनसेन (2019, पृष्ठ संख्या)

उद्धरण (स्रोत से सटीक शब्द):

पैरेन्थेटिकल उद्धरण: केस स्टडी दर्शाती है कि "स्कूली शिक्षा के सामान्य मानदंडों पर, हमारा नमूना नागरिक विफल रहा है क्योंकि वह आवश्यक कौशल को दोहरा नहीं सकता है या प्रासंगिक सिद्धांतों को लागू नहीं कर सकता है" (ब्रौडी, 1998, पृष्ठ 9)।

वर्णनात्मक उद्धरण: ब्रौडी (1998, पृष्ठ 9) का तर्क है कि "स्कूली शिक्षा के सामान्य मानदंडों पर, हमारा नमूना नागरिक विफल रहा है क्योंकि वह आवश्यक कौशल को दोहरा नहीं सकता है या प्रासंगिक सिद्धांतों को लागू नहीं कर सकता है"।

उद्धरण अकादमिक लेखन का एक अनिवार्य हिस्सा हैं क्योंकि वे आपके द्वारा उपयोग किए गए स्रोतों के मूल लेखकों को श्रेय देते हैं, और उचित उद्धरण आपके काम में उपयोग किए गए किसी भी तथ्य, विचार, सूचना, डेटा, छवियों, व्याख्याओं या विश्लेषणों के स्रोत को स्पष्ट रूप से स्वीकार करके साहित्यिक चोरी से बचने में आपकी सहायता करते हैं।

पाद लेख

यह एक पाठ्य टिप्पणी है जो उस पृष्ठ पर उल्लिखित किसी चीज़ के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी प्रदान करती है, जो आपके कार्य में अभी-अभी उल्लिखित जानकारी से जुड़ी होती है। यह आमतौर पर पृष्ठ के निचले भाग में एक फुटनोट के रूप में आपके पाठ के प्रवाह को बाधित किए बिना पूरक जानकारी और स्पष्टीकरण होता है। लंबे फुटनोट को अगले पृष्ठ पर जारी रखा जा सकता है। फुटनोट की संख्या आपके पूरे कार्य/थीसिस में निरंतर होनी चाहिए। प्रत्येक प्रविष्टि के भीतर फुटनोट एकल-स्पेस वाले होने चाहिए, लेकिन प्रत्येक प्रविष्टि के बीच दोहरे-स्पेस वाले होने चाहिए। फुटनोट के फ्रॉन्ट आकार के लिए, APA 10 पॉइंट (टाइम्स न्यू रोमन) का उपयोग करने की अनुशंसा करता है।

ग्रंथ सूची

एक ग्रंथसूची, शोध प्रक्रिया के दौरान किसी कार्य के लिए उपयोग किए गए सभी स्रोतों (चाहे उद्धृत किए गए हों या नहीं) की एक व्यापक सूची प्रदान करती है, जिसमें वे स्रोत भी शामिल होते हैं जिनका उल्लेख कार्य में नहीं किया गया था। ग्रंथसूची की सूची में संदर्भ स्रोत की तुलना में अधिक स्रोत शामिल होते हैं

क्योंकि संदर्भ सूची में केवल वे स्रोत शामिल हो सकते हैं जिनका उल्लेख किसी कार्य/शोध प्रबंध में किया गया था।

अकादमिक लेखन में, एक ग्रंथसूची दस्तावेज़ पाठकों या शोधार्थियों को विषय पर आगे की खोज, पठन और शोध के लिए अतिरिक्त संसाधन प्रदान करता है। इसका उपयोग आमतौर पर शोध प्रस्ताव लेखन और शोध सारांश कार्य में किया जाता है।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

संदर्भ आपके कार्य में उद्धृत सभी स्रोतों की सूची है और उद्धरणों से अधिक विस्तृत है, और आमतौर पर आपके शोध-पत्र/थीसिस/दस्तावेज़ के अंत में दिए जाते हैं। संदर्भ देना अकादमिक लेखन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें आपके शोध-पत्र में उद्धृत सभी स्रोतों को स्वीकार किया जाता है और साथ ही यह भी बताया जाता है कि जानकारी को किस क्रम में रखा गया है। उचित संदर्भ देने से आपको अपने विचारों और अन्य स्रोतों से प्राप्त विचारों के बीच स्पष्ट अंतर करके साहित्यिक चोरी से बचने में मदद मिलती है।

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (APA) द्वारा प्रकाशित संदर्भ शैली का उपयोग करने की अनुशंसा की जाती है। संदर्भ सूची प्रविष्टियों को प्रत्येक कृति के प्रथम/मुख्य लेखक के अंतिम नाम के अनुसार वर्णानुक्रम में APA शैली में व्यवस्थित किया जाना चाहिए। एक ही लेखक की कई कृतियों (लेखों या पुस्तकों) के लिए, प्रविष्टियों को तिथि के अनुसार कालानुक्रमिक क्रम में, सबसे प्रारंभिक से सबसे नवीनतम तक सूचीबद्ध करें। यदि कृतियाँ एक ही वर्ष में प्रकाशित हुई हैं, तो उन्हें शीर्षक के अनुसार वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करें और तिथि के बाद एक अक्षर (उदाहरण के लिए a, b, c, d , आदि) डालें। संदर्भ सूची प्रत्येक प्रविष्टि के भीतर एकल-अंतराल वाली होनी चाहिए, लेकिन प्रत्येक प्रविष्टि के बीच दोहरा-अंतराल होना चाहिए।

शोध छात्र/छात्र को विभिन्न प्रकार के संदर्भों के लिए एपीए शैली (7वां संस्करण) का पालन करना चाहिए (नीचे दिए गए उदाहरण देखें):

1. जर्नल लेख (अनुभाग 10.1)

एडवर्ड्स, ए.ए., स्टीसी, एल.एम., सीगलमैन, एन., रिगोबॉन , वी.एम., किर्न्स, डी.एम., रुएक्ल, जे.जी., और कॉम्पटन, डी.एल. (2022)। परिवर्तनशीलता के लिए सेट और शब्द पठन विकास के बीच द्वितीय संबंध का अन्वेषण: प्रदर्शन के शब्द- और बाल-स्तरीय पूर्वानुमानों का परीक्षण। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 114(6), 1242–1256। <https://doi.org/10.1037/edu0000696>

2. ऑनलाइन पत्रिका लेख (अनुभाग 10.1)

थॉमसन, जे. (2022, 8 सितंबर)। यूटा की ग्रेट साल्ट लेक पर विशाल, विचित्र सफ़ेद संरचनाएँ दिखाई दीं। न्यूज़वीक। <https://www.newsweek.com/mysterious-mounds-great-salt-lake-utah-explained-mirabilite-1741151>

3. प्रिंट पत्रिका लेख (अनुभाग 10.1)

निकोल, के. (2020, मई)। एक शाही चिंगारी। वैनिटी फ़ेयर, 62(5), 56–65, 100।

4. ऑनलाइन समाचार पत्र लेख (अनुभाग 10.1)

बर्नस्टीन, जे. (2024, 3 जून)। वह व्यक्ति जो कॉलेज जाना बंद नहीं कर सका। द न्यूयॉर्क टाइम्स।
<https://www.nytimes.com/2024/06/03/magazine/benjamin-bolger-college-harvard-yale.html>

5. प्रिंट समाचार पत्र लेख (अनुभाग 10.1)

रेनॉल्ड्स, जी. (2019, 9 अप्रैल)। एथलेटिक हृदयों के लिए विभिन्न स्ट्रोक। द न्यूयॉर्क टाइम्स, D4।

6. ब्लॉग पोस्ट (अनुभाग 10.1)

रटलेज, पी. (2024, 23 अप्रैल)। क्या किशोर डिजिटल साक्षरता के लिए बहुत छोटे हैं? डॉ. पाम: मीडिया के साथ जीवन। <https://www.pamelarutledge.com/are-tweens-too-young-for-digital-literacy/>

7. लेखकीय पुस्तक (अनुभाग 10.2)

कॉफ़मैन, के.ए., ग्लास, सी.आर., और पिन्सू, टी.आर. (2018)। माइंडफुल स्पोर्ट परफॉर्मेंस एन्हांसमेंट: एथलीटों और कोचों के लिए मानसिक प्रशिक्षण। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन।
<https://doi.org/10.1037/0000048-000>

8. संपादित पुस्तक अध्याय (अनुभाग 10.3)

ज़ेलेके, डब्ल्यूए, ह्यूजेस, टीएल, और ड्रोज़डा, एन. (2020)। मन-शरीर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए घर-विद्यालय सहयोग। सी. मेकेल और एमए ब्रे (सं.) में, स्कूलों में मन-शरीर स्वास्थ्य को बढ़ावा देना: मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए हस्तक्षेप (पृष्ठ 11-26)। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन।
<https://doi.org/10.1037/0000157-002>

9. ऑनलाइन शब्दकोश प्रविष्टि (अनुभाग 10.3)

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (2018)। इंटरनेट की लत। मनोविज्ञान के एपीए शब्दकोश में।
<https://dictionary.apa.org/internet-addiction>

10. समूह लेखक द्वारा रिपोर्ट (अनुभाग 10.4)

विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2014)। मातृ, शिशु और छोटे बच्चों के पोषण पर व्यापक कार्यान्वयन योजना।
https://apps.who.int/iris/bitstream/handle/10665/113048/WHO_NMH_NHD_14.1_eng.pdf?ua=1

11. व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रिपोर्ट (अनुभाग 10.4)

विन्धोप, आर., ज़िग्लर, एल., हांडा, आर., और फ़कोया, एफ. (2019)। कैसे चंचल शिक्षा शिक्षा में प्रगति को तेज़ी से बढ़ाने में मदद कर सकती है। ब्रुकिंग्स में सार्वभौमिक शिक्षा केंद्र।

https://www.brookings.edu/wp-content/uploads/2019/04/how_playful_learning_can_help_leapfrog_progress_in_education.pdf

12. प्रेस विज्ञप्ति (धारा 10.4)

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन। (2024, 11 अप्रैल)। जो लोग लक्ष्य प्राप्ति के लिए केवल इच्छाशक्ति का उपयोग करते हैं और प्रलोभनों का विरोध करते हैं, उन्हें अधिक विश्वसनीय माना जाता है [प्रेस विज्ञप्ति]। <https://www.apa.org/news/press/releases/2024/04/people-who-use-willpower>

13. सम्मेलन सत्र (अनुभाग 10.5)

डेविडसन, आरजे (2019, 8-11 अगस्त)। कल्याण एक कौशल है [सम्मेलन सत्र]। एपीए 2019 सम्मेलन, शिकागो, आईएल, संयुक्त राज्य अमेरिका। https://irpcdn.multiscreensite.com/a5ea5d51/files/uploaded/APA2019_Program_190708.pdf

14. डेटाबेस से शोध प्रबंध (अनुभाग 10.6)

होर्वाथ-प्लाइमैन, एम. (2018). सोशल मीडिया और कॉलेज छात्रों का सफ़र: सोशल मीडिया का उपयोग सामाजिक पूँजी और कॉलेज चयन, पहुँच और परिवर्तन को कैसे प्रभावित करता है, इसका एक परीक्षण (प्रकाशन संख्या 10937367) [डॉक्टरेट शोध प्रबंध, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय]। प्रोक्टेस्ट डिज़र्टेशन्स एंड थीसिस ग्लोबल।

15. प्रीप्रिंट आलेख (अनुभाग 10.8)

लैटिमियर , ए., पेरे, एच., और रामस, एफ. (2020)। पुनर्प्राप्ति अभ्यास के एपिसोड के बीच अंतराल रखने से अवधारण पर होने वाले लाभ की एक मेटा-विश्लेषणात्मक समीक्षा। PsyArXiv । <https://psyarxiv.com/kzy7u/>

16. डेटा सेट (अनुभाग 10.9)

ओ'डोनोह्यू, डब्ल्यू. (2017). स्नातक मनोविज्ञान पाठ्यपुस्तकों का सामग्री विश्लेषण (आईसीपीएसआर 21600; संस्करण v1) [डेटा सेट]। राजनीतिक और सामाजिक अनुसंधान के लिए अंतर-विश्वविद्यालय संघ। <https://doi.org/10.3886/ICPSR36966.v1>

17. फिल्म या वीडियो (धारा 10.12)

डॉक्टर, पी., और डेल कारमेन, आर. (निर्देशक)। (2015)। इनसाइड आउट [फ़िल्म]। वॉल्ट डिज़्नी पिक्चर्स; पिक्सर एनिमेशन स्टूडियो।

18. टीवी सीरीज़ एपिसोड (धारा 10.12)

डिप्पोल्ड, के. (लेखक), और ट्रिम, एम. (निर्देशक)। (2011, 14 अप्रैल)। फैसी पार्टि (सीज़न 3, एपिसोड 9) [टीवी सीरीज़ एपिसोड]। जी. डेनियल्स, एच. क्लेन, डी. माइनर, और एम. शूर (कार्यकारी निर्माता), पार्क्स एंड रिक्लेशन में।

डीडल -डी प्रोडक्शंस; फ्रेमुलन; 3 आर्ट्स एंटरटेनमेंट; यूनिवर्सल मीडिया स्टूडियो।

19. वेबिनार (अनुभाग 10.12)

ली, सी., मैकएडू, टी., और डेनेनी, एस. (2023). प्रशिक्षकों के लिए एपीए स्टाइल सातवें संस्करण का रिफ्रेशर [वेबिनार]।

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन. <https://apastyle.apa.org/instructional-aids/tutorials-webinars>

20. यूट्यूब वीडियो (धारा 10.12)

शोर से ऊपर। (2017, 18 अक्टूबर)। क्या टालमटोल अच्छी बात हो सकती है? [वीडियो]। YouTube। <https://www.youtube.com/watch?v=FQMwmBNNOnQ>

21. गीत या ट्रैक (धारा 10.13)

निर्वाण (1991). किशोर आत्मा जैसी खुशबू [गीत]. नेवरमाइंड पर . डीजीसी.

22. रेडियो प्रसारण (धारा 10.13)

हर्शर , आर. (2020, 19 मार्च)। आज पूरे अमेरिका में बसंत ऋतु की शुरुआत हो रही है, जो अजीब है [रेडियो प्रसारण]। एनपीआर।

<https://www.npr.org/2020/03/19/817237429/spring-starts-today-all-over-america-which-is-weird>

23. पॉडकास्ट एपिसोड (खंड 10.13)

सैंटोस, एल. (होस्ट)। (दूसरा) मनोरोगी और सुपरहीरो (नंबर 1) [ऑडियो पॉडकास्ट एपिसोड]। डॉ. लॉरी सैंटोस के साथ हैप्पीनेस लैब में। पुश्किन इंडस्ट्रीज। <https://www.happinesslab.fm/season-2-episodes/episode-1>

24. इन्फोग्राफिक (अनुभाग 10.14)

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (एनडी)। डेटा शेयरिंग [इन्फोग्राफिक]। <https://www.apa.org/pubs/journals/data-sharing-infographic.pdf>

25. कक्षा वेबसाइट से पावरपॉइंट (अनुभाग 10.14)

मैक, आर., और स्पेक, जी. (2018). प्रस्तुतियों के लिए ओपन सोर्स छवियों का हवाला देना और संदर्भों को फॉर्मेट करना

[पावरपॉइंट स्लाइड्स]. Canvas@FNU . <https://fnu.onelogin.com/login>

26. एक्स पोस्ट (धारा 10.15)

ओबामा, बी. [@BarackObama]. (2024, 17 मई)। आज 70 साल पूरे हो गए हैं जब सुप्रीम कोर्ट ने ब्राउन बनाम बोर्ड ऑफ एजुकेशन मामले में [पोस्ट] को गैरकानूनी घोषित करते हुए अपना ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। X. <https://x.com/BarackObama/status/1791540592238874953>

27. मुक्त शैक्षिक संसाधन (अनुभाग 10.16)

फगन, जे. (2024, 7 फ़रवरी)। नर्सिंग क्लिनिकल ब्रेन। ओईआर कॉमन्स। 2 जून, 2024 को <https://www.oercommons.org/authoring/53029-nursing-clinical-brain/view> से लिया गया।

28. वेबपेज (धारा 10.16)

टारस, ज़ेड. (2024, 30 मई)। परिस्थितिजन्य विडंबनाएँ मज़ेदार, दुखद या भयावह भी हो सकती हैं। howstuffworks . <https://entertainment.howstuffworks.com/arts/literature/situational-irony.htm>

29. समाचार वेबसाइट पर वेबपेज (धारा 10.16)

वोल्पे, ए. (2024, 3 जून)। सेल्फ-केयर इंडस्ट्री ने हमें कितना अकेला बना दिया है। वॉक्स। <https://www.vox.com/even-better/350424/self-care-isolation-loneliness-epidemic>

30. पुनर्प्राप्ति तिथि वाला वेबपेज (अनुभाग 10.16)

वर्ल्डोमीटर (एनडी)। वर्तमान विश्व जनसंख्या। 27 जून, 2024 को <https://www.worldometers.info/world-population/> से प्राप्त।